

माता-पिता, भाई सहित 6 अन्य पर केस की मांग

दीपेंद्र के प्रतिनिधि गुगनानी पर दहेज उत्पीड़न का केस दर्ज

पीड़िता ने एसपी से दोबारा जांच की मांग की

■ राजनीतिक पहुंच के चलते कार्रवाई प्रभावित होने का दावा

■ दहेज और बुटिक का सामान वापस नहीं करने का आरोप

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रोहतक

झंग कॉलोनी निवासी महिला की शिकायत पर उसके पति सुलभ गुगनानी पर दहेज उत्पीड़न की एफआईआर सिविल लाइन थाने में दर्ज की गई है। लेकिन कार्रवाई से असंतुष्ट पीड़िता ने दोबारा जांच के लिए एसपी गौरव राजपुरोहित को पत्र सौंपा है। महिला ने बताया है कि सुलभ रोहतक सांसद दीपेंद्र हुड्डा के प्रतिनिधि हैं। महिला का कहना है कि उसने अपने पति एवं



रोहतक। एक कार्यक्रम में दीपेंद्र हुड्डा के साथ सुलभ गुगनानी। फोटो: हरिभूमि

ससुराल पक्ष के विरुद्ध शिकायत दी थी, जिसमें सुलभ सहित उसके पिता राजीव, मां, भाई सौरभ, चाचा राकेश और अन्य शामिल हैं। इन सभी व्यक्तियों द्वारा उसके

साथ किए गए दहेज उत्पीड़न, कृतता, उसके निजी सामान को अपने पास रखने तथा अन्य वैवाहिक अपराधों से संबंधित कृत्यों एवं आचरण का विशेष रूप से उल्लेख किया गया था। शिकायत के साथ संबंधित सहायक दस्तावेज भी प्रस्तुत किए थे। लेकिन पुलिस ने केवल उसके पति के खिलाफ ही केस दर्ज किया है। मामले के अनुसार, झंग कॉलोनी निवासी घनश्याम दास छाबड़ा ने पुलिस को शिकायत दी है। इसमें बताया कि उसकी बेटी की शादी 30 अगस्त 2020 को सुलभ गुगनानी के साथ हुई थी। इससे पूर्व 40 लाख सगाई में खर्च किए गए। शादी में करीब एक करोड़ खर्च किया गया। क्षमता से अधिक दान दहेज दिया गया। उनसे कहा गया कि बहुत कम दहेज दिया गया है। उनकी बेटी को बार-बार प्रताड़ित किया गया।

लोन दिलवाने के लिए भी दबाव बनाया

घनश्याम दास छाबड़ा ने कहा- उनकी बेटी ने बताया कि उससे कहा गया कि यह बहुत कम सामान मिला है। उस पर दबाव बनाया गया कि घर का सारा खर्च वह खुद उठाएगी। सुलभ का काम सही नहीं चल रहा है। जबकि शादी से पहले बताया गया कि सुलभ की पांच लाख रुपये माह की आय है। कम दहेज देने पर उसका मानसिक उत्पीड़न किया गया। पीड़िता का आरोप है कि उसने अपने पिता से आठ लाख रुपये लेकर अपना बुटिक का काम किया। घर का खर्च उसे ही चलाना पड़ रहा था। 10 अप्रैल 2025 को पांच लाख रुपये अपने पिता से लेकर पति को दिए। वह उस पर दबाव बनाता रहा कि उसकी फार्मस्यूटिकल इंस्ट्रूमेंट के लिए लोन दिलवाया जाए नहीं तो वह उसे अपने पास नहीं रखेगी। पीड़िता के परिजन बैंक अधिकारी हैं। इन पर लोन दिलवाने के लिए दबाव दिया गया।

घर से भी निकाल दिया

महिला को सुलभ सहित सुलभ के पिता, मां, भाई, चाचा सहित सात अन्य लोगों ने प्रताड़ित किया और महिला 30 अक्टूबर 2025 को घर से निकाला गया। इसके बाद न उसे दहेज का सामान वापस दिया गया और न ही बुटिक का सामान वापस दिया गया। पुलिस थाना में दोनों पक्षों में कई बार मीटिंग हुई लेकिन सुलभ नहीं हुई। इसके बाद पुलिस ने सुलभ के खिलाफ केस दर्ज किया है जबकि अन्य छह लोगों के खिलाफ कार्रवाई नहीं की गई। परिवार का कहना है कि यह राजनीतिक पहुंच वाले व्यक्ति हैं और इन सभी पर केस दर्ज होना चाहिए। पीड़िता ने रोहतक पुलिस से ब्याज की मांग की है।

जांच की जा रही

महिला की शिकायत पर सुलभ के खिलाफ दहेज उत्पीड़न का केस दर्ज किया गया है। मामले की जांच की जा रही है।

-महेन्द्र सिंह, एसएचओ सिविल लाइन

पीजीआईएमईआर चंडीगढ़ पर गंभीर आरोप नवजात को पहले बताया लड़का, फिर कहा लड़की

बच्चे की मौत के बाद रोहतक के परिवार ने उठाई जांच की मांग, दी शिकायत



पहचान और जेंडर को लेकर सामने आए विरोधाभास की पड़ताल की जाए

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रोहतक

पीजीआईएमईआर चंडीगढ़ में नवजात की पहचान और जेंडर को लेकर मूल रूप से रोहतक और अभी मनीमाजरा में रह रहे परिवार ने गंभीर सवाल उठाए हैं। उनका कहना है कि उन्होंने 22 वर्षीय कोमल को 17 अगस्त को प्रसव के लिए पीजीआईएमईआर में भर्ती कराया था। परिवार के अनुसार, 18 अगस्त को डिलीवरी के बाद डॉक्टरों और स्टफ ने नवजात को लड़का बताया। दस्तावेजों में भी जेंडर मेल दर्ज है। परिवार का आरोप है कि पीजीआई में नवजात के लिए बेड उपलब्ध नहीं होने की बात कहकर उन्हें निजी अस्पताल जाने को कहा गया। इसके बाद 18 अगस्त की रात वे मोरिडा के फतेह अस्पताल पहुंचे। वहां डॉक्टरों ने बताया कि नवजात लड़का नहीं, लड़की है। परिवार ने पीजीआई से संपर्क किया तो नवजात को वापस बुलाया। वे 20 अगस्त को सुबह पीजीआई पहुंचे। परिवार के मुताबिक, यहां बच्चे की हालत गंभीर बनाने के साथ जेंडर स्पष्ट नहीं होने की बात कही गई। बाद में नवजात की मौत हो गई। बच्चे के पिता लकी कुमार ने पीजीआई प्रशासन और थाना पुलिस को शिकायत देकर पूरे मामले की निष्पक्ष जांच कराने और जिम्मेदार व्यक्ति के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है।

निष्पक्ष जांच होगी

शिकायत में लगाए गए सभी आरोपों की जांच की जाएगी। जांच के दौरान जो भी तथ्य सामने आएंगे, उनके आधार पर कार्रवाई की जाएगी। अगर ऐसा कुछ हुआ है तो मामले की निष्पक्ष जांच करवाई जाएगी। यदि किसी तरह की लापरवाही या चूक सामने आती है तो दोषियों के खिलाफ कानून के कार्रवाई की जाएगी।

- प्रवक्ता, पीजीआईएमईआर, चंडीगढ़

बी.पी.एड. (B.P.Ed.) में दाखिला आरंभ

पी.टी.आई. तथा डी.पी.ई. (शास्त्रीय शिक्षा निदेशक) के पद पर होगी नियुक्ति

राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद (NCTE) से मान्यता प्राप्त एवं इंडिया गांधी विश्वविद्यालय, मीरपुर, रेवाड़ी (IGU) से सम्बद्ध महाराणा प्रताप कालेज ऑफ एजुकेशन, धनीन्दा (ब्लॉक - कनीना), जिला महेन्द्रगढ़ (हरियाणा) में सत्र 2026-28 हेतु बी.पी.एड. (B.P.Ed.) (डी.पी.ई. कोर्स) में दाखिला आरंभ हो गया है। बी.पी.एड. में प्रवेश हेतु स्नातक में 50% अंक तथा राज्य स्तर का खेल का प्रमाण पत्र होना आवश्यक है। एस.सी. विद्यार्थियों को सरकार द्वारा छात्रवृत्ति दी जाती है। इच्छुक विद्यार्थी सीधे कॉलेज में दाखिला ले सकते हैं तथा www.mpcokanina.com व कॉलेज फोन नं. 9467834482, 8053910428 पर जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। (Adv.)

वाहन की टक्कर से युवक की मौत

गांव नौनंद के पास हादसा, दोस्त भी गंभीर घायल

भैयापुर में सोते परिवार के घर से 11 लाख कैश व जेवर चोरी

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रोहतक

आईएमटी क्षेत्र के गांव नौनंद के पास सुनसान सड़क पर हुए हादसे ने एक परिवार की खुशियां छीन लीं। बाइक पर सवार दो दोस्तों को अज्ञात वाहन ने टक्कर मार दी। हादसे में बाइक सवार 26 वर्षीय अनीश पुत्र रोशन लाल निवासी मदीना गिंधराण की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि उसका दोस्त 21 वर्षीय विपिन पुत्र सीताराम निवासी चमारिया गंभीर रूप से घायल हो गया। हादसे के बाद अज्ञात वाहन चालक मौके से फरार हो गया। राहगीरों ने पुलिस को सूचना देने के साथ घायल को अस्पताल पहुंचाया।

आईएमटी की तरफ जा रहे थे दोनों

अनीश अपने दोस्त विपिन के साथ बाइक से नौनंद आईएमटी की ओर जा रहा था। चौराहे के पास अज्ञात वाहन ने बाइक को टक्कर मार दी। हादसे में अनीश की मौके पर मौत हो गई, जबकि विपिन गंभीर घायल हो गया। पुलिस ने जांच शुरू कर दी।

वाहन चालक मौके से फरार

विपिन को पहले पीजीआई ट्रॉमा सेंटर में भर्ती कराया गया, बाद में परिजन उसे निजी अस्पताल ले गए। पुलिस घायल के बयान दर्ज कर हादसे की जांच करेगी। वहीं, हादसे के बाद वाहन चालक मौके से फरार हो गया।

पोस्टमार्टम के लिए शव डेड हाउस में रखवाया

आईएमटी थाना के जांच अधिकारी एसआई राजेश ने बताया कि आईएमटी क्षेत्र में सड़क हादसे की सूचना मिली थी। पुलिस टीम ने मौके पर पहुंचकर शव को कब्जे में लिया और पोस्टमार्टम के लिए डेड हाउस में रखवा दिया। मृतक के परिजनों की शिकायत के आधार पर कार्रवाई की जा रही है।

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रोहतक

गांव भैयापुर में रात के समय चोरों ने ऐसे घर को निशाना बनाया, जिसमें परिवार के सदस्य सो रहे थे। दंपति नीचे के कमरे में सोता रहा और उनका बेटा ऊपर कमरे में सो रहा था, लेकिन किसी को भनक तक नहीं लगी। सुबह आंख खुली तो दूसरे कमरे में बेड और अलमारी का सामान बिखरा पड़ा था। जांच करने पर करीब 11 लाख रुपये नकद, 14 तोले सोने के आभूषण और चांदी के जेवर गायब मिले। चोरी का पता चलते ही परिवार ने पुलिस को सूचना दी। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर जांच शुरू कर दी है।

बेड और अलमारी सब खाली किया

सीसीटीवी जांच रही पुलिस

पुलिस ने पॉइंट की शिकायत पर केस दर्ज कर लिया है। चोरों के प्रवेश व जाने के रास्ते का पता लगाने के लिए सीसीटीवी फुटेज खंगाल रही है।

न आवाज सुनाई दी, न चोरों का पता चला

चोर घर में घुसकर दूसरे कमरे से सामान ले गए, लेकिन सो रहे परिवार को भनक तक नहीं लगी। न आवाज सुनाई दी और न ही चोरों के आने-जाने का रास्ता पता चला।

हरीभूमि

ROOTS IVF & FERTILITY

NABH Accredited

हरीभूमि

ROOTS IVF & FERTILITY

NABH Accredited

हरीभूमि

ROOTS IVF & FERTILITY

NABH Accredited

Celebrating

23

ANNIVERSARY

OF HEALING & CARE

स्वास्थ्य सेवा में गौरवपूर्ण दो दशक

24 अगस्त 2003 से निरंतर

JJ HOSPITAL

(Jeevan Jyoti, Bahadurgarh)

Thank you

for Believing in us

ON OUR PANEL : ECHS, ESIC, DTC, AAYUSHMAAN BHARAT, HARYANA GOVERNMENT, DELHI GOVERNMENT (DGHS), DMRC, INDIAN OIL, HPCL & ALL INSURANCE CO.

Bahadurgarh

JJ Institute of Medical Sciences,
Metro Pillar-792, Bahadurgarh

Roots IVF - Rohtak

2nd floor, Unity Plaza,
Near Ashoka Chowk

7056108108

7056682015

7056682002

cm@jjmedicalinstitute.com

jjmedicalinstitute.com

rohtakroots@gmail.com

Instagram

Facebook

WhatsApp

Twitter

ख़बर संक्षेप

महम चीनी मिल ने बेचा सबसे महंगा शीरा

महम। महम चीनी मिल की ओर से दावा किया गया है कि मिल द्वारा अन्य चीनी मिलों की अपेक्षा सबसे महंगा शीरा बेचा गया है। सुप्रीमेटेंट विरेंद्र रोहिला ने बताया कि मिल द्वारा 22 अगस्त को 3000 क्विंटल शीरे की बिक्री 1770 रुपये प्रति क्विंटल की दर से की गई है। जोकि हरियाणा समेत उत्तर भारत में सीजन 2025-26 के लिए अभी तक सबसे उच्चतम दर है। शनिवार को ही शाहबाद चीनी मिल द्वारा 2010 क्विंटल शीरे की बिक्री 1675 रुपये प्रति क्विंटल की दर से की गई है।

ब्रह्माकुमारीज सेंटर में रक्तदान शिविर आज

महम। रविवार 23 अगस्त को सुबह 9 बजे से दोपहर दो बजे तक वार्ड 12 स्थित ब्रह्माकुमारीज सेंटर में रक्तदान शिविर लगाया जाएगा। यह शिविर ब्रह्माकुमारीज ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि की 19वीं पुण्यतिथि पर लगाया जाएगा। सेंटर संचालिका बीके चेतना ने बताया कि यह रक्तदान महा अभियान विश्व बंधुत्व की भावना को प्रबल करने के लिए शुरू किया गया है।

हुड्डा ने बीजेपी सरकार बनाने में की थी मदद : चौटाला

महम। इनलो सुप्रोमो अभय सिंह चौटाला ने शनिवार शाम को लाखन मा जरा गांव में हलका स्तरीय कार्यक्रमों सम्मेलन को संबोधित किया। अभय सिंह चौटाला ने कहा कि भूपेंद्र सिंह हुड्डा की मदद से आज प्रदेश में तीसरी बार भाजपा की सरकार बनी है। कांग्रेस हमेशा से ही परोक्ष रूप से बीजेपी की मदद करती आ रही है। चौटाला ने कहा कि हुड्डा में अगर हिम्मत है तो किसी भी सार्वजनिक मंच पर बहस करे जहां प्रदेश की जनता होगी और प्रदेश की मीडिया सबके सामने साबित करूंगा कि हुड्डा ने कहा कहा बीजेपी की खुलकर मदद की है। अभय सिंह चौटाला 27 सितंबर को नूंह मेवात में होने वाली स्व.ताऊ देवी लाल जन्मदिन पर आयोजित सम्मान दिवस समारोह का न्यूता देने के लिए पहुंचे थे।

नपा कर्मियों की मांगों पूरी करे सरकार : अडीचंद रोहतक।

नगरपालिका कमचारी संघ की लंबे समय से जारी हड़ताल को लेकर कांग्रेस के वरिष्ठ नेता एवं पूर्व चेयरमैन जिला रोहतक अडीचंद निम्बडिया ने सरकार से कर्मचारियों की मांगों का जल्द समाधान करने की मांग की है। उन्होंने कहा कि 13 मई को सरकार की ओर से कर्मचारियों की मांगों को स्वीकार किए जाने का आश्वासन दिया गया था, लेकिन इसके बावजूद आज तक मांगों को पूरी तरह लागू नहीं किया गया है। अडीचंद निम्बडिया ने कहा कि हड़ताल पर बैठे नगरपालिका कर्मचारियों की नियुक्तियों को नियमित किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि मात्र 10-12 हजार रुपये मासिक वेतन में परिवार का पालन-पोषण करना बेहद मुश्किल है। बढती महंगाई को देखते हुए कर्मचारियों का वेतन कम से कम 30 हजार रुपये किया जाना जरूरी है। उन्होंने कहा कि नपा कर्मचारियों की हड़ताल लंबी खिंचने के कारण शहर की सफाई व्यवस्था प्रभावित हो रही है।

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रोहतक

महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय (एमडीयू) के हॉस्टल नंबर-9 में मूलभूत सुविधाओं के अभाव और गंभीर लापरवाही का मामला सामने आया है। हॉस्टल में लंबे समय से साफ-सफाई की स्थिति बदहाल बनी हुई है, जिसके कारण छात्रों को भारी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। विद्यार्थियों ने बताया कि इस हॉस्टल साफ सफाई अच्छे तरीके से होती ही नहीं है। अभी नया सेशन शुरू हो चुका है। शुरू से सफाई बिल्कुल नहीं है। उन्होंने बताया कि पिछले साल भी ऐसा ही हाल था। हॉस्टल के



रोहतक। हॉस्टल 9 में गंदा वॉशबेसिन।

फोटो : हरिभूमि

भीतर टॉयलेट की स्थिति बेहद दयनीय है। टॉयलेट बिल्कुल गंदे पड़े हैं और कई जगह टॉयलेट की सीटें भी टूटी हुई हैं। इसके अलावा, वॉशबेसिन भी अत्यधिक गंदे हैं। नियमित सफाई

न होने के कारण हॉस्टल परिसर में लगातार तेज बदबू आती रहती है, जिससे कमरों में रहना भी मुश्किल हो गया है। छात्रों का कहना है कि इस भयंकर गंदगी और बदबू के कारण



रोहतक। टॉयलेट टूटी हुई सीट।

फोटो : हरिभूमि

हॉस्टल में विभिन्न गंभीर बीमारियों के फैलने का भी लगातार खतरा बना हुआ है। समस्याओं का सिलसिला यहीं नहीं थमता। शनिवार को ए-विंग में ग्राउंड फ्लोर पर शाम के समय पानी

की आपूर्ति भी पूरी तरह ठप रही। मूलभूत सुविधाओं के इस तरह चरमराने से छात्रों में विश्वविद्यालय प्रशासन के प्रति भारी रोष देखने को मिल रहा है।

एमडीयू प्रशासन पूरी तरह लापरवाह : अमित
एसएफआई के जिला सचिव अमित ने इस मुद्दे पर कड़ा रोष व्यक्त करते हुए कहा कि एमडीयू प्रशासन हॉस्टल में रहने वाले विद्यार्थियों की बुनियादी जरूरतों के प्रति पूरी तरह लापरवाह बना हुआ है। उन्होंने कहा कि साफ-सफाई और पेयजल जैसी मूलभूत सुविधाएं मुहैया कराना प्रशासन की प्राथमिक जिम्मेदारी है। हॉस्टल की फॉर हर बढ़ा दी जाती है, लेकिन सुविधाएं लगातार घटा रहे हैं।

भगवान भरोसे चल रही व्यवस्थाएं : प्रदीप मोटा
शहीद भगत सिंह ग्रुप के अध्यक्ष प्रदीप मोटा ने कहा कि हॉस्टल के टॉयलेट्स की टूटी सीटें, गंदगी और पेयजल संकट इस बात का प्रमाण है कि यहां व्यवस्थाएं भगवान भरोसे चल रही हैं। उन्होंने बताया यह एमडीयू के एक हॉस्टल की समस्या नहीं है लगभग सभी हॉस्टल में यह समस्या है। इस प्रकार की गंदगी के बीच छात्रों को रखना उनके स्वास्थ्य के साथ खुला खिलवाड़ है।

जल्द करवाई जाएगी सफाई
यह मामला संज्ञान में नहीं था। अगर साफ सफाई नहीं हुई है तो जल्द ही सफाई करवाई जाएगी।
-डॉ. राकेश, हॉस्टल नंबर 9 वार्डन, एमडीयू

रक्तदाताओं को पुलिसकर्मियों ने नशे के दुष्प्रभावों पर किया जागरूक

■ रक्तदान कर जरूरतमंदों की जिंदगी बचाने का काम करें

हरिभूमि न्यूज ▶▶ सांपला

एक ओर युवा दूसरों की जिंदगी बचाने के लिए रक्तदान कर रहे थे, वहीं सांपला थाना पुलिस ने इसी मंच से उन्हें नशे के खिलाफ जागरूक किया। ब्रह्मकुमारी गीता पाठशाला सांपला की ओर से रक्तदान जागृति मंच के माध्यम से महाराजा अग्रसेन भवन, मुख्य बाजार सांपला में रक्तदान शिविर लगाया गया। शिविर में सांपला थाना प्रभारी निरीक्षक सुरेंद्र कुमार के नेतृत्व में पुलिस टीम पहुंची और रक्तदाताओं को नशे से दूर रहने का संदेश दिया। पुलिस टीम ने शिविर में मौजूद युवाओं से कहा कि रक्तदान कर वे समाज और जरूरतमंद लोगों की जिंदगी बचाने में योगदान दे रहे हैं। इसी तरह नशे से दूर रहकर भी वे अपने परिवार और समाज को मजबूत बना सकते हैं। पुलिसकर्मियों ने युवाओं को नशे के स्वास्थ्य, पर पड़ने वाले गंभीर दुष्प्रभावों के बारे में जानकारी दी।



सांपला। रक्तदाताओं को सम्मानित करते सांपला थाना प्रभारी निरीक्षक सुरेंद्र कुमार व अन्य।

फोटो : हरिभूमि

शिक्षा और खेलों में ऊर्जा लगाने की अपील

पुलिस टीम ने युवाओं को नशे से दूरी बनाकर अपनी ऊर्जा शिक्षा, खेलकूद और अन्य सकारात्मक गतिविधियों में लगाने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि युवा किसी भी समाज को सबसे बड़ी ताकत हैं और नशे की विरफ्त में आने से उनका भविष्य प्रभावित होने के साथ परिवार भी परेशान होता है।

नशा तस्करों की सूचना देने का आह्वान

पुलिस ने युवाओं से अपील की कि यदि उनके आसपास कोई व्यक्ति नशीले पदार्थों की खरीद-फरोख्त करता है या युवाओं को नशे की ओर धकेलने का प्रयास करता है तो इसकी सूचना तुरंत पुलिस को दें। सूचना देने वाले व्यक्ति की पहचान गोपनीय रखी जाएगी और नशे का कारोबार करने वालों के खिलाफ नियमानुसार सख्त कार्रवाई की जाएगी।

रक्तदाताओं का बढ़ाया होसला

शिविर में रक्तदान करने वाले युवाओं की होसलाअफजाई के लिए आयोजकों की ओर से पुरस्कार भी वितरित किए गए। पुलिस टीम ने युवाओं को स्वयं नशे से दूर रहने और समाज को नशामुक्त बनाने में सक्रिय भूमिका निभाने का संकल्प लेने के लिए प्रेरित किया।

पौधरोपण व सड़क सुरक्षा जागरूकता अभियान के तहत लगाए 80 पौधे, बच्चों को दी जानकारी

रोहतक। राजकीय मॉडल संस्कृति प्राथमिक विद्यालय रोहतक में पर्यावरण संरक्षण और सड़क सुरक्षा को समर्पित एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विद्यालय परिसर में 80 पौधे रोपे गए और बच्चों के लिए यातायात नियमों पर जागरूकता सत्र हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता अमित कादयान ने की तथा संचालन रमित हुड्डा के सहयोग से हुआ। रक्षा मंत्रालय की अधिकारी प्रिया रानी और शशिकला का इसमें विशेष योगदान रहा। मुख्य अस्थापक अनिल कुमार, शिक्षक पवन मलिक, विकास दहिया, रेखा रानी और कुसुम वर्मा ने विद्यार्थियों के साथ पौधे लगाए। साहस वेलफेयर सोसाइटी से सुदेश कादियान, अमित लांबा, राजेश कुहन, अजय लाकड़ा सहित अन्य सदस्यों ने सक्रिय सहभागिता निभाई।



क्रांयस्थान पाडा मोहल्ला रोहतक

दीपेंद्र 1984 के पीड़ितों से सार्वजनिक माफी मांगें : शमशेर सिंह खरक

रोहतक। माजपा के प्रदेश मीडिया सह-प्रमारी शमशेर सिंह खरक ने कांग्रेस सांसद दीपेंद्र सिंह हुड्डा द्वारा 1984 के सिख विरोधी दंगों में दोषसिद्ध रहे दिवंगत सज्जन कुमार को लेकर की गई टिप्पणी पर कड़ा ऐतराज जताया है। उन्होंने कहा कि अदालत से दोषसिद्ध व्यक्ति को सार्वजनिक रूप से 'रोल मॉडल' बताना 1984 के पीड़ित परिवारों की पीड़ा और लंबे समय से चली आ रही न्याय की लड़ाई के प्रति बेहद असंवेदनशील रहेगा है। उन्होंने दीपेंद्र हुड्डा से अपने बयान पर रपार्टिकरण देने तथा 1984 के पीड़ितों और सिख समाज से सार्वजनिक रूप से माफी मांगने की मांग की। शमशेर सिंह खरक ने कहा कि 1984 की हिंसा से जुड़े मामलों में अदालतों द्वारा सज्जन कुमार को उमकंद की सजा सुनाई जा चुकी है। दिल्ली हाईकोर्ट ने 2018 में उन्हें दोषी ठहराते हुए आजीवन कारावास की सजा सुनाई थी, जबकि फरवरी 2025 में दिल्ली की राजज एवेन्यू अदालत ने एक अन्य 1984 मामले में भी उन्हें उमकंद की सजा सुनाई।

सांपला कस्बे में लगे गंदगी के ढेर

■ नगरपालिका के मुताबिक शहर से प्रतिदिन निकलता है 16 टन कचरा

हरिभूमि न्यूज ▶▶ सांपला

नपा सफाई कर्मचारियों की हड़ताल जारी है। कर्मचारियों की हड़तालके चलते हालत बिगड़ गई है। पहले से ही स्वच्छता अभियान में पिछड़ा हुआ है। सफाई के मामले में और भी स्थिति खराब हो गई है। पिछले दस दिनों से सफाई कर्मचारी अपनी मांगों को लेकर हड़ताल पर हैं। नगरपालिका को मुताबिक प्रतिदिन करीब 16 टन कचरा निकलता है। कस्बे की सभी सड़कों के अलावा गलियों में भी कचरा जमा होने लगा है। बाजार में सड़क



पर तो गली सड़ी, सब्जी फल फेंका जा रहा है जिससे बदबू उठने लगी है। लोगों ने प्रशासन से समस्या का समाधान करने की अपील की है।

विस में गूंजेगा पानी की किल्लत, अधूरी कॉलोनियां, पार्कों की बदहाली का मुद्दा

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रोहतक

हरियाणा विधानसभा के मानसून सत्र में शहर के कांग्रेस विधायक भारत भूषण बत्रा ने शहर और प्रदेश से जुड़े जनहित के मुद्दों को लेकर सरकार से जवाब मांगा है। विधायक ने अब तक 7 सवाल लगाए हैं, जिनमें 5 अतारंकित और 2 तारंकित प्रश्न शामिल हैं। इसके अलावा नियमों के तहत रोहतक से जुड़े कई अन्य महत्वपूर्ण मुद्दे भी सदन में उठाए जाएंगे। विधायक



स्वास्थ्य अभियंत्रिकी मंत्री से पूछा है कि क्या सरकार इस बात से सहमत है कि रोहतक शहर में पेयजल की गंभीर समस्या बनी हुई है और शहरवासी इससे परेशान हैं। विधायक ने तीनों वाटर वर्क्स-1, 2 और 3 की जल

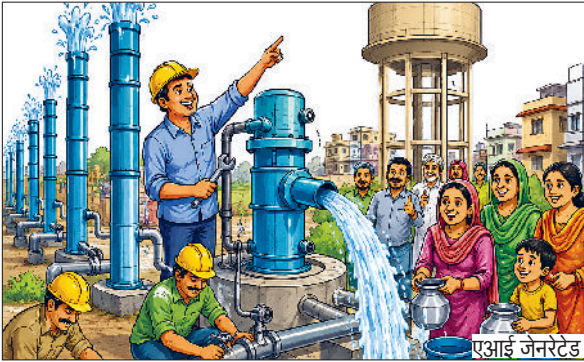
बत्रा ने अपने तारंकित प्रश्न में रोहतक की गंभीर पेयजल समस्या को उठाया है। उन्होंने जन कवसित इस कॉलोनी में प्लॉट व मकानों की रजिस्ट्री, विक्रय विलेख और स्वीकृत नक्शों पर रोक क्यों लगाई गई है। विधायक बत्रा ने अक्टूबर 2024 से जुलाई 2026 तक प्रदेश की कानून व्यवस्था को लेकर भी मुख्यमंत्री से विस्तृत जानकारी मांगी है।

रोबोटिक नी रिप्लेसमेंट पर आमजन को किया जागरूक

रोहतक। घुटने और कूल्हे के दर्द को उस बढ़ने का सामान्य हिस्सा मानकर नजरअंदाज करना कई बार मारी पड़ सकता है। जोड़ों के दर्द और जॉइंट रिप्लेसमेंट के आधुनिक विकल्पों के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए एचसीएमसीटी मणिपाल हॉस्पिटल, दिल्ली की ओर से रोहतक में एक विशेष जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मणिपाल इंस्टीट्यूट ऑफ बोन एंड जॉइंट्स के चेयरमैन डॉ. राजीव वर्मा ने बताया कि कैसे जोड़ों का कार्टिलेज खराब होने से जोड़ों में अकड़न और दर्द की समस्या बढ़ जाती है। यह बीमारी आमतौर पर बढ़ती उम्र के साथ होती है, लेकिन मोटापा, पुरानी चोटों या अनुवर्धक कारणों से कम उम्र के लोग भी इसकी चपेट में आ सकते हैं। डॉ. राजीव वर्मा ने आधुनिक चिकित्सा तकनीक के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि रोबोटिक तकनीक की मदद से किए जाने वाले टोटल नी रिप्लेसमेंट से सर्जरी से पहले सटीक प्लानिंग और ऑपरेशन के दौरान अधिक सटीकता हासिल करना संभव होता है।



अब नहरबंदी के दौरान भी नहीं होगी पेयजल किल्लत शहर में लगभग 18 नए ट्यूबवेल, मिलेगी निजात



एआई जेनरेटड

किए जाएंगे, जिससे नहरों में पानी की आपूर्ति बंद रहने की स्थिति में भी लोगों को नियमित रूप से पेयजल उपलब्ध कराया जा सकेगा। शहर में हर वर्ष गर्मी के दिनों में नहरबंदी होने पर जलापूर्ति प्रभावित हो जाती है। कई इलाकों में

पानी का दबाव कम हो जाता है, जबकि कुछ क्षेत्रों में लोगों को पर्याप्त मात्रा में पानी नहीं मिल पाता। इस समस्या के समाधान के लिए विभाग ने वैकल्पिक जल स्रोतों को मजबूत करने की योजना तैयार की है। योजना के तहत वार्ड

विभाग जल्द यह कनेक्शन लगवाए तो होगा फायदा

स्थानीय लोगों ने विभाग की इस पहल का स्वागत किया है। उनका कहना है कि गर्मियों में पानी की समस्या सबसे बड़ी परेशानी बन जाती है। यदि नहरबंदी के दौरान भी नियमित जलापूर्ति जारी रहती है तो हजारों परिवारों को राहत मिलेगी।

नहरबंदी शुरू होने से पहले पूरा किया जाए कनेक्शन कार्य

जन स्वास्थ्य विभाग का लक्ष्य है कि नहरबंदी शुरू होने से पहले सभी प्रस्तावित ट्यूबवेल कनेक्शनों का कार्य पूरा कर लिया जाए। इसके लिए आवश्यक बजट, तकनीकी स्वीकृतियां और अन्य प्रक्रियाएं तेजी से पूरी की जा रही हैं। इस योजना के लागू होने के बाद शहर में पेयजल व्यवस्था और अधिक मजबूत होगी तथा लोगों को पानी की कमी से जूझना नहीं पड़ेगा।

-संदीप कुमार, कार्यकारी अभियंता, जन स्वास्थ्य व अभियंत्रिकी विभाग

नंबर 6, वार्ड नंबर 7, किला मोहल्ला, पाड़ा मोहल्ला, सालारा मोहल्ला सहित शहर के अन्य जरूरतमंद क्षेत्रों में नए ट्यूबवेल कनेक्शन लगाए जाएंगे। इन ट्यूबवेलों को जल वितरण प्रणाली से जोड़ा जाएगा, जिससे नहरबंदी के दौरान भी जलापूर्ति सुचारु बनी रहेगी। विभाग ने इसके लिए सर्वेक्षण और तकनीकी प्रक्रिया शुरू कर दी है। नए ट्यूबवेल शुरू होने से पानी का दबाव बढ़ेगा और दूरस्थ मोहल्लों तक भी पर्याप्त मात्रा में पेयजल पहुंच सकेगा। इससे टैंकों पर निर्भरता कम होगी और लोगों को राहत मिलेगी।



राजकीय महिला महाविद्यालय में 'जेंडर सेंसटाइजेशन' पर विस्तार व्याख्यान

रोहतक। राजकीय महिला महाविद्यालय, रोहतक की आंतरिक शिकायत समिति (आईसीसी) द्वारा शनिवार को "जेंडर सेंसटाइजेशन" (लैंगिक संवेदनशीलता) विषय पर एक विशेष विस्तार व्याख्यान का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। महाविद्यालय के प्राचार्य श्री शमशेर सिंह हुड्डा की अध्यक्षता में हुए इस कार्यक्रम का औपचारिक स्वागत करते हुए कार्यक्रम की रूपरेखा और इसके उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में पहुंचे सेवानिवृत्त पुलिस अधीक्षक (एसपी.) जगत सिंह हुड्डा ने कार्यस्थल पर सम्मानजनक व्यवहार, संवेदनशील दृष्टिकोण और एक सुरक्षित वातावरण के महत्व पर विस्तृत चर्चा की। उन्होंने कहा कि एक स्वस्थ और सकारात्मक कार्य-संस्कृति के लिए आपसी सम्मान, समानता और जिम्मेदार व्यवहार बेहद आवश्यक हैं।

अंडर-19 अंतर जिला क्रिकेट टूर्नामेंट 2026-27 में टीमों ने दिखाया दमखम भिवानी ने कुरुक्षेत्र को 165 और गुरुग्राम ने हिसार को 70 रन से हराया

भिवानी के आर्मन ने 92 गेंदों पर नाबाद 101 रन बनाए। गुरुग्राम की तरफ से अमिराज ने 142 गेंदों पर 94 रन का शानदार योगदान दिया

चौधरी बंसी लाल क्रिकेट स्टेडियम में खेले गए मुकाबलों में टीमों ने किया शानदार प्रदर्शन

नेशनल के लिए चयनित

हरिभूमि न्यूज»»रोहतक

भिवानी ने 50 ओवर में बनाए 257 रन

भिवानी ने कुरुक्षेत्र को 165 रनों से रौंदा चौधरी बंसी लाल क्रिकेट स्टेडियम के वाउंड 'ए' पर भिवानी और कुरुक्षेत्र के बीच मुकाबला खेला गया। टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए भिवानी की टीम ने निर्धारित 50 ओवरों में 4 विकेट के मुकसान पर 257 रनों का मजबूत स्कोर खड़ा किया।

गुरुग्राम ने टॉस जीत कर बल्लेबाजी चुनी

गुरुग्राम ने हिसार को 70 रनों से हराया स्टेडियम के वाउंड 'बी' पर खेले गए दूसरे मुकाबले में गुरुग्राम और हिसार की टीम आमने-सामने थीं। टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए गुरुग्राम ने 50 ओवरों में 7 विकेट पर 226 रन बनाए।

हरियाणा क्रिकेट एसोसिएशन द्वारा आयोजित अंडर-19 अंतर जिला टूर्नामेंट 2026-27 'रोमांचक दौर' में पहुंच गया है। 22 अगस्त 2026 को खेले गए मुकाबलों में युवा खिलाड़ियों ने अपनी प्रतिभा का शानदार प्रदर्शन किया। चौधरी बंसी लाल क्रिकेट स्टेडियम में खेले गए मुकाबलों में भिवानी और गुरुग्राम की टीमों ने अपने-अपने मैचों में बेहतरीन खेल दिखाते हुए शानदार जीत दर्ज की और अगले दौर के लिए क्वालीफाई किया।

भिवानी की पारी की मुख्य आकर्षण आर्मन कुमार यादव की शानदार शतकीय पारी रही। आर्मन ने बेहतरीन बल्लेबाजी करते हुए 92 गेंदों पर नाबाद 101 रन बनाए। उनका बखूबी साथ देते हुए केतन ने 83 गेंदों पर 69 रनों की ठोस पारी



जॉन वेस्ले कॉन्वेंट स्कूल में बच्चों ने सीखे आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के गुर

रोहतक। गोहाना रोड स्थित जॉन वेस्ले कॉन्वेंट स्कूल में 18 से 21 अगस्त 2026 तक आयोजित चार दिवसीय टेक्नो वीक का उद्घाटनपूर्ण समारोह हुआ। इस विशेष आयोजन का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों में तकनीकी ज्ञान, डिजिटल जागरूकता और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) के सकारात्मक व जिम्मेदार उपयोग की समझ विकसित करना था। सप्ताह भर चले इस कार्यक्रम में कक्षा 1 से XI तक के विद्यार्थियों ने अपनी आयु के अनुसार विभिन्न गतिविधियों में भाग लिया। जूनियर कक्षाओं के बच्चों ने एआई वीडियो और गेम्स का आनंद लिया, वहीं सीनियर वर्ग के विद्यार्थियों ने एकेडमिक एंड एआई के उपयोग, प्रॉम्ट राइटिंग, एआई बायस, और 'ट्रस्ट एंड वेरिफाई' जैसे समसामयिक विषयों पर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। समापन समारोह में प्रधानाचार्या डॉ. ममता मलिक ने विद्यार्थियों को संबोधित करते कहा कि तकनीक आज शिक्षा का अभिन्न हिस्सा है।

छात्रों को किया कागज से कलात्मक रचनाएं तैयार करने के लिए प्रेरित

हरिभूमि न्यूज»»रोहतक

महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय (एमडीयू) के विजुअल आर्ट्स विभाग में पेपर आर्ट एवं क्राफ्ट विषय पर विशेष शिक्षण सत्र आयोजित किया गया। सत्र में बलदेवराज ने विद्यार्थियों को कागज से विभिन्न कलात्मक एवं रचनात्मक वस्तुएं तैयार करने की तकनीकों की जानकारी दी। बलदेवराज ने विद्यार्थियों को पेपर आर्ट एवं क्राफ्ट की विभिन्न विधियों, उनमें उपयोग होने वाली सामग्रियों और रचनात्मक संभावनाओं से अवगत कराया। उन्होंने विद्यार्थियों को स्वयं प्रयोग करते हुए कागज के माध्यम से कलात्मक रचनाएं तैयार करने के लिए प्रेरित किया। इस दौरान उन्होंने पेपर क्राफ्ट में डिजाइन, संरचना और रचनात्मकता के महत्व को भी

बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय में एआई और जलवायु परिवर्तन के राजनीतिक प्रभावों पर विद्यार्थियों ने रखे विचार

रोहतक। बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय में मानविकी संकाय के राजनीति विज्ञान एवं लोक प्रशासन विभाग की ओर से 'कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) का राजनीति और चुनावों पर प्रभाव' तथा 'जलवायु परिवर्तन और राजनीति: भविष्य की वैश्विक चुनौती' विषयों पर भाषण प्रतियोगिता का प्रभावशाली आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ विवि के कुलपति प्रो. बी.एम. यादव के मार्गदर्शन एवं अनुमति से हुआ। कार्यक्रम में एआई के राजनीति और चुनावों पर बढ़ते प्रभाव पर चर्चा करते वक्ताओं ने कहा कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता राजनीति और चुनावी प्रक्रिया को अधिक तेज, तकनीकी एवं प्रभावशाली बना रही है। इसके माध्यम से सोशल मीडिया प्रचार और मतदाताओं से संवाद को अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है। हालांकि, इसके साथ फेक न्यूज, भ्रमक प्रचार, डेटा के दुरुपयोग तथा जनमत को प्रभावित करने जैसी गंभीर चुनौतियां भी सामने आ रही हैं। भविष्य में एआई के बढ़ते उपयोग के साथ निष्पक्ष एवं पारदर्शी चुनाव सुनिश्चित करना एक महत्वपूर्ण जिम्मेदारी होगी। जलवायु परिवर्तन के विषय पर वक्ताओं ने कहा कि यह केवल पर्यावरण से जुड़ी समस्या नहीं है, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के अस्तित्व, अर्थव्यवस्था और वैश्विक राजनीति के सामने खड़ी बड़ी चुनौती है। डीएसडब्ल्यू डॉ. सुधीर मलिक ने एआई के बढ़ते उपयोग पर विचार व्यक्त करते कहा कि इसका सकारात्मक उपयोग राजनीति और चुनावों को अधिक प्रभावी बना सकता है। मानविकी संकाय के डीन डॉ. ब्रह्म प्रकाश ने कहा कि जलवायु परिवर्तन आज विश्व राजनीति की प्रमुख चुनौतियों में से एक है। इससे पर्यावरण, अर्थव्यवस्था और विभिन्न देशों की सुरक्षा प्रभावित हो रही है।



विद्यार्थियों ने वैज्ञानिक सोच और रचनात्मकता पर आधारित आकर्षक मॉडल व परियोजनाएं प्रस्तुत कीं

रोहतक। विद्या भारती और हिंदू शिक्षा समिति द्वारा संचालित शिक्षा भारती विद्यालय में आज शिक्षक-अभिभावक बैठक व इन्वेंटिव आइडिया प्रदर्शनी का भव्य आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने अपनी वैज्ञानिक सोच और रचनात्मकता पर आधारित आकर्षक मॉडल व परियोजनाएं प्रस्तुत कीं, जिन्हें अभिभावकों ने बेहद सराहा। अभिभावक-शिक्षक बैठक प्रमुख रसिका ने बताया कि इस प्रदर्शनी से बच्चों की समस्या-समाधान क्षमता और नवीन प्रविभा का सुंदर प्रदर्शन हुआ। बैठक के दौरान शिक्षकों और अभिभावकों ने विद्यार्थियों की शैक्षणिक प्रगति, अनुशासन और सर्वांगीण विकास पर विस्तार से चर्चा की। प्रधानाचार्या डॉ. ममजीत मलिक ने कहा कि विद्यालय, शिक्षक और अभिभावक के त्रिविध सहयोग से ही बच्चों का समग्र विकास संभव है। उन्होंने विद्यार्थियों को जिज्ञासु व आत्मविश्वासी बनने के लिए प्रेरित किया।

मदवि प्रशासन ने तीनों प्रमुख मांगों को माना मीसो ने धरना 15 सितंबर तक किया स्थगित

रोहतक। महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय (एमडीयू), रोहतक में फीस वृद्धि एवं छात्र हितों से जुड़ी मांगों को लेकर द्वारा पिछले 12 दिनों से जारी शांतिपूर्ण लोकतांत्रिक धरना प्रशासन के साथ सकारात्मक वार्ता के बाद 15 सितंबर तक स्थगित कर दिया गया है। 21 अगस्त की देर रात एमडीयू के रजिस्ट्रार प्रो. संदीप बखल, चीफ वार्डन, प्रोक्टर एवं प्रो. राजेश पुनिया का प्रतिनिधिमंडल धरना स्थल पर पहुंचा और मीसो पदाधिकारियों के साथ विस्तृत बातचीत की। वार्ता के दौरान प्रशासन ने मीसो की तीनों प्रमुख मांगों को मानते हुए उन्हें लागू करने पर सहमति जताई। विश्वविद्यालय का दृढ़ विश्वास है कि शैक्षणिक समाधान के लिए सार्थक संवाद और पारस्परिक समझ अत्यंत आवश्यक है। विवि प्रशासन विद्यार्थियों के हितों के प्रति पूर्णतः संवेदनशील है और एक समावेशी, सहयोगात्मक तथा छात्र-केंद्रित शैक्षणिक वातावरण उपलब्ध करने के लिए प्रतिबद्ध है। समिति का गठन विवि के उन ईमानदार प्रयासों का प्रतीक है, जिनका उद्देश्य सभी हितधारकों के हितों की रक्षा करते हुए संतुलित एवं न्यायसंगत समाधान तलाशना है। समिति में अधिष्ठाता शैक्षणिक कार्य (डीन एकेडमिक अफेयर्स) को संयोजक नियुक्त किया गया है।

त्योहार 28 अगस्त को मनाया जाएगा रक्षा बंधन पर्व

सूर्योदय से पहले खत्म होगा भद्रा का साया राखी बांधने का शुभ मुहूर्त सुबह 5:57 बजे से

हरिभूमि न्यूज»»रोहतक

भाई-बहन के प्रेम का प्रतीक रक्षाबंधन पर्व श्रावण माह की पूर्णिमा को मनाया जाता है। इस दिन बहन अपने भाई के मस्तक पर टीका लगाकर रक्षा का बंधन बांधती है, जिसे राखी कहते हैं। रक्षाबंधन में राखी या रक्षासूत्र का सबसे अधिक महत्व है। इस बार पूर्णिमा 28 अगस्त को है। इस दिन राखी बांधने का शुभ मुहूर्त सुबह 5 बजकर 57 मिनट से शुरू होगा। पंडित वेदप्रकाश कौशिक ने बताया कि रक्षाबंधन पर इस बार खास बात यह है कि भद्रा का साया सूर्योदय से पहले ही समाप्त हो रहा है। और शतभिषा नक्षत्र व अन्य ग्रहों के विशेष संयोग के कारण यह दिन ज्योतिषीय दृष्टि से बहुत ही शुभ माना जा रहा है। उनका कहना है कि पूर्णिमा तिथि 27 अगस्त की प्रातः 9 बजकर 8 मिनट पर शुरू होगी और अगले दिन यानि कि 28 अगस्त की प्रातः 9 बजकर 48 मिनट पर समाप्त होगी। राखी बांधने का शुभ मुहूर्त प्रातः 5 बजकर 57 मिनट से 9 बजकर 48 मिनट तक रहेगा। दिन के शुरूआती हिस्से में राखी बांधने के लिए पूरा समय सुरक्षित और शुभ है।

राखियों से गुलजार होने लगे बाजार

रक्षा बंधन पर्व नजदीक आते ही बाजार राखियों से गुलजार होने शुरू हो गए हैं। दुकानों से लेकर रेहड़ियों तक पर आकर्षक राखियां सजाई जा रही हैं। महिलाओं का मायके जाकर अपने भाइयों को राखी बांधने का सिलसिला दो-तीन दिन पहले ही शुरू हो जाता है। इस पर्व को लेकर दुकानदारों में खासा उत्साह देखा जा रहा है।

पौराणिक महत्व भी है रक्षाबंधन का

इस पर्व का पौराणिक प्रसंग भी है। राखी का पर्व कब शुरू हुआ, यह कोई नहीं जानता। लेकिन भविष्य पुराण में उल्लेख है कि देव और दानवों में जब युद्ध शुरू हुआ, तब दानव हावी होते नजर आने लगे। भगवान इंद्र घबराकर बृहस्पति के पास गए। इंद्र की पत्नी इन्द्राणी ने रेशम का धागा मंत्रों की शक्ति से पवित्र कर अपने पति के हाथ पर बांध दिया था। संयोग से वह श्रावण पूर्णिमा का दिन था।

रक्षा बंधन पर्व नजदीक आते ही बाजार राखियों से गुलजार होने शुरू हो गए हैं। दुकानों से लेकर रेहड़ियों तक पर आकर्षक राखियां सजाई जा रही हैं। महिलाओं का मायके जाकर अपने भाइयों को राखी बांधने का सिलसिला दो-तीन दिन पहले ही शुरू हो जाता है। इस पर्व को लेकर दुकानदारों में खासा उत्साह देखा जा रहा है।

पौराणिक महत्व भी है रक्षाबंधन का

इस पर्व का पौराणिक प्रसंग भी है। राखी का पर्व कब शुरू हुआ, यह कोई नहीं जानता। लेकिन भविष्य पुराण में उल्लेख है कि देव और दानवों में जब युद्ध शुरू हुआ, तब दानव हावी होते नजर आने लगे। भगवान इंद्र घबराकर बृहस्पति के पास गए। इंद्र की पत्नी इन्द्राणी ने रेशम का धागा मंत्रों की शक्ति से पवित्र कर अपने पति के हाथ पर बांध दिया था। संयोग से वह श्रावण पूर्णिमा का दिन था।

रक्षा बंधन पर्व नजदीक आते ही बाजार राखियों से गुलजार होने शुरू हो गए हैं। दुकानों से लेकर रेहड़ियों तक पर आकर्षक राखियां सजाई जा रही हैं। महिलाओं का मायके जाकर अपने भाइयों को राखी बांधने का सिलसिला दो-तीन दिन पहले ही शुरू हो जाता है। इस पर्व को लेकर दुकानदारों में खासा उत्साह देखा जा रहा है।

पौराणिक महत्व भी है रक्षाबंधन का

इस पर्व का पौराणिक प्रसंग भी है। राखी का पर्व कब शुरू हुआ, यह कोई नहीं जानता। लेकिन भविष्य पुराण में उल्लेख है कि देव और दानवों में जब युद्ध शुरू हुआ, तब दानव हावी होते नजर आने लगे। भगवान इंद्र घबराकर बृहस्पति के पास गए। इंद्र की पत्नी इन्द्राणी ने रेशम का धागा मंत्रों की शक्ति से पवित्र कर अपने पति के हाथ पर बांध दिया था। संयोग से वह श्रावण पूर्णिमा का दिन था।



सांगवान स्कूल के छात्रों ने जूडो एथलेटिक्स में लहराया परचम

■ सीबीएसई नॉर्थ जोन खेलकूद प्रतियोगिताओं में शानदार प्रदर्शन कर स्कूल का नाम रोशन किया

हरिभूमि न्यूज»»रोहतक

जिले में आयोजित सीबीएसई नॉर्थ जोन जूडो प्रतियोगिता और खेलकूद प्रतियोगिताओं में सांगवान इंटरनेशनल स्कूल के विद्यार्थियों ने अपनी खेल प्रतिभा का शानदार प्रदर्शन करते हुए विद्यालय का नाम रोशन किया है।

प्रतियोगिता के दौरान विद्यालय की छठी कक्षा की छात्रा समाईका ने अंडर-14 वर्ग में रजत पदक और हिरन ने इसी वर्ग में कांस्य पदक हासिल किया। इसके साथ ही, गौरव ने अंडर-17 आयु वर्ग के 55 किलोग्राम भार वर्ग में बेहतरीन खेल कौशल दिखाते हुए कांस्य पदक

‘पवन’ सी रफ्तार से दौड़ी पावनी, 100 व 200 मीटर रेस में जीते गोल्ड

हरिभूमि न्यूज»»रोहतक

जिले की होनहार बेटी पावनी ने अपनी तेज रफ्तार का लोहा मनवाते हुए एक बार फिर जिले और प्रदेश का नाम रोशन किया है। भिवानी के प्रसिद्ध भीम स्टेडियम में 18 अगस्त से 20 अगस्त तक आयोजित 59वीं

विद्यार्थियों को स्वाध्याय, संयम और वैदिक संस्कृति के संरक्षण का दिशा संदेश

रोहतक। डीएवी स्कूल, डी एल.एफ./कमला नगर के प्रांगण में 22 अगस्त से 27 अगस्त तक आयोजित होने वाले श्रावणी पर्व का शुभारंभ आज प्राचार्य की अध्यक्षता में श्रद्धा और हवेलीलास के साथ हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत वैदिक मंत्रोच्चार और यज्ञ-हवन के साथ की गई, जिसमें विद्यार्थियों और शिक्षकों ने पूर्ण आहुति दी। इस अवसर पर प्राचार्य ने श्रावणी पर्व के महत्व पर प्रकाश डालते हुए इसे वेदों के स्वध्याय, आत्म-शुद्धि और ऋषियों के प्रति कृतज्ञता का पर्व बताया। उन्होंने विद्यार्थियों को नियमित स्वाध्याय, सदाचार, संयम और वैदिक संस्कृति के संरक्षण का संदेश देते हुए जीवन में अछे संस्कार अपनाने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों द्वारा मन् के गहरे अध्यारे में ओम का नाम बिंदू जैसा सुंदर भजन प्रस्तुत किया गया। अंत में समाज और राष्ट्र के कल्याण की कामना के साथ शांति पाठ किया गया।

लोकतंत्र की मजबूती के लिए प्रत्येक पात्र नागरिक का मतदाता होना बहुत आवश्यक : सतबीर सिंह

■ 18 वर्ष की आयु पूर्ण कर चुके युवा 30 अगस्त तक जमा करवाएं फॉर्म-6

हरिभूमि न्यूज»»रोहतक

भारत निर्वाचन आयोग एवं मुख्य निर्वाचन अधिकारी, हरियाणा के निर्देशानुसार जिले में एसआईआर 2026 (विशेष गहन पुनरीक्षण) अभियान चलाया जा रहा है। इस अभियान के तहत मतदाता सूची को अधिक शुद्ध, पारदर्शी एवं अद्यतन बनाने का कार्य किया जा रहा है। उपायुक्त सतबीर सिंह ने जिलावासियों से आह्वान किया है कि वे इस विषय अभियान में सक्रिय भागीदारी निभाएं और यह सुनिश्चित करें कि उनका नाम मतदाता सूची में सही रूप से दर्ज हो।

एमडीयू के नए यूजी छात्रों का दीक्षारंभ 25 अगस्त से

■ वैज्ञानिक और पूर्व विंग कमांडर करेंगे मोटिवेट

हरिभूमि न्यूज»»रोहतक

महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय (एमडीयू) में नव प्रवेशित स्नातकीय (यूजी) विद्यार्थियों के लिए 25 अगस्त से दीक्षारंभ इंडक्शन प्रोग्राम शुरू होगा। टैगोर सभागार में सुबह 9 बजे से आयोजित होने वाले इस कार्यक्रम में विद्यार्थियों को मोटिवेशनल सत्रों के माध्यम से उच्च शिक्षा, व्यक्तिगत विकास और करियर निर्माण के लिए प्रेरित किया जाएगा। डीन स्टूडेंट वेलफेयर प्रो. सपना गर्ग ने बताया कि इस कार्यक्रम में प्रतिष्ठित वैज्ञानिक एवं जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के पर्यावरण विभाग के प्रोफेसर डॉ. पी.के. जोशी तथा भारतीय वायु सेना की सेवानिवृत्त विंग कमांडर गीतांजलि सिंह मोटिवेशनल स्पीकर के रूप में विद्यार्थियों को संबोधित करेंगे।

SHAHEED MAYAK RAMNIWAS GOVT. SR. SEC. SCHOOL ISMAILA (ROHTAK)

सूचना

राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय इस्माइला में मिड डे मील वक्रे/ कुक के एक पत्र हेतु भर्ती विभागिया नियमानुसार दिनांक: 24.08.2026 सुबह 11 बजे ('ग्राहक बनें') को जा रही है। इच्छुक अभ्याथी सलाहकार हेतु अगर लिखित आवश्यक दस्तावेज साथ लेकर आई-Updated family ID, निवास प्रमाण-पत्र, जाति प्रमाण-पत्र, बैंक पासबुक, शैक्षणिक प्रमाण-पत्र, Affidavit (जिसमें अभ्याथी के खिलाफ कोई आपराधिक मामला दर्ज न हो) व खाना पकाने का पूर्ण ज्ञान हो। चयन सलाहकार के माध्यम से होगा।

Sd/- Principal, Govt. Sr. Sec. School Ismaila (2854), Rohtak

सफाई कर्मचारी संघ का ऐलान, डंपिंग प्लांट से नहीं उठाने देंगे कचरा

500 से ज्यादा लोग रोजाना वायरल बुखार की चपेट में डेंगू, चिकनगुनिया, जुकाम व आईपलू के मरीज बढ़े

हरिभूमि न्यूज रोहतक

नगर पालिका कर्मचारी संघ हरियाणा के आह्वान पर सफाई कर्मचारियों की हड़ताल शनिवार को 17वें दिन भी जारी रही। हड़ताल के चलते शहर में जगह-जगह लगे कूड़े के ढेर अब लोगों के लिए परेशानी के साथ-साथ बीमारी का कारण बनते जा रहे हैं। कई कॉलोनियों में कूड़ा सड़ने और उससे उठने वाली दुर्गंध के कारण लोगों को परेशानी हो रही है। शहर में रोजाना 500 से अधिक लोग वायरल बुखार की चपेट में आ रहे हैं। वहीं कई लोगों को गले में संक्रमण और आंखों से संबंधित परेशानी होने की शिकायत भी सामने आ रही है। ऐसे में पुलिस व निगम प्रशासन पूरी तरह से फैल नजर आ रहा है। सफाई व्यवस्था ठप होने से कॉलोनियों और मुख्य कूड़ा प्लांटों पर कूड़े के ढेर लगातार बढ़ते जा रहे हैं। कई स्थानों पर कूड़ा सड़ने से दुर्गंध फैल रही है और आवारा पशु कूड़े को सड़क तक फैला रहे हैं।

सफाई कर्मचारियों की टुकड़ियां बनाकर शहर के 46 कूड़ा प्लांटों पर तैनात की बारिश के कारण स्थिति और खराब हो गई है। लोगों का कहना है कि लंबे समय से जमा कूड़े के कारण आसपास रहना मुश्किल हो रहा है। बच्चों और बुजुर्गों को लेकर परिवार ज्यादा चिंतित हैं। इधर, हड़ताल के 17वें दिन सफाई कर्मचारियों ने अपनी रणनीति में बदलाव किया है। नगर निगम इकाई प्रधान शंभू टांक के नेतृत्व में कर्मचारियों ने प्रदर्शन करते हुए कहा कि अब शहर की मुख्य सड़कों, चौक-चौराहों और पुलों पर कूड़ा नहीं डाला जाएगा। शंभू टांक ने बताया कि सफाई कर्मचारियों की टुकड़ियां बनाकर शहर के 46 कूड़ा प्लांटों पर तैनात की गई हैं।



शहर में जमा कूड़ा



पुल से कूड़ा हटाते कर्मी



महम में 17वें दिन भी हड़ताल पर रहे सफाई कर्मचारी

महमा नपा के सफाई कर्मचारी शनिवार को 17वें दिन भी हड़ताल पर रहे। हड़ताली कर्मचारियों ने सरकार के खिलाफ जमकर नारेबाजी करते हुए अपनी मांगों को लेकर रोष जताया। कर्मचारियों ने आरोप लगाया कि सरकार उनकी मांगों को गंभीरता से लेने के बजाय लगातार टालमटोल कर रही है। हड़ताल की अध्यक्षता नगरपालिका सफाई कर्मचारी यूनियन के प्रधान संजय कागड़ा और फायर विभाग के प्रधान सोमबीर ने की। सर्व कर्मचारी संघ महम ब्लॉक के प्रधान राजेंद्र सिंह डाबला ने कहा कि सरकार की मंशा स्पष्ट नजर नहीं आ रही है। सरकार कर्मचारियों को बार-बार वार्ता के लिए बुलाती है, लेकिन बातचीत को सार्थक दिशा देने के बजाय मुद्दों से बच रही है, जिससे वार्ता विफल हो रही है। उन्होंने कहा कि कर्मचारियों को पक्का करने सहित अन्य जायज मांगों का समाधान नहीं किया जा रहा। उन्होंने कहा कि आंदोलन किसी व्यक्ति विशेष के खिलाफ नहीं, बल्कि शोषण और अन्याय के खिलाफ है।

समझौता लागू करने की मांग

प्रधान शंभू टांक ने कहा कि कर्मचारियों की लड़ाई सरकार से है और आमजन को परेशान करना उनका उद्देश्य नहीं है। शहरवासियों की परेशानी और उन्हें मिल रहे समर्थन व सुझावों को देखते हुए अब सड़कों पर कूड़ा नहीं डाला जाएगा। उन्होंने सरकार से 13 मांगों को कर्मचारियों के साथ हुए समझौते को लागू कर मांगें पूरी करने की मांग की।

विधायक के रवैये की निंदा

प्रदर्शन के दौरान राकेश चावरिया ने बहादुरगढ़ विधायक के रवैये पर सवाल उठाते हुए आरोप लगाया कि हड़ताली कर्मचारियों से ज्ञापन लेने के बजाय उन्हें डराने-धमकाने का प्रयास किया गया। उन्होंने कहा कि सरकार को नाकामियों को ताकत के दम पर दबाने का प्रयास चलत है। नपा कर्मचारी संघ इसकी कड़े शब्दों में निंदा करता है।



प्रदर्शन में ये रहे शामिल

प्रदर्शन का मंच संचालन अशोक थोरिया ने किया। इस दौरान राजकुमार टांक, सुरेश पिवाल, कंवल राणा, भीम चावरिया, रवि चट्ठा, प्रतीक बिड़लान, विक्रम बोहर, रोहित बिड़लान, आजाद दरोगा, सीताराम दरोगा, सिकंदर बिड़लान, जितेंद्र पवार, राजू सोदा, सुरेंद्र चावरिया, राजे मकडौली, रमेश घोषलिया, जगदीश दरोगा, प्रदीप दरोगा, पुनीत दरोगा और अनूप दरोगा सहित अन्य कर्मचारी मौजूद रहे। महिला विंग से अनिता, सुशीला, अंजना, दर्शना, सीमा, सुदेश, कमलेश, मालो, संतोष, सुमित्रा और शीला सहित अन्य कर्मचारी भी प्रदर्शन में शामिल हुईं।

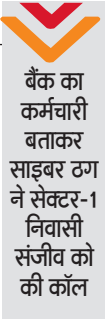
बैंक खाते की लिमिट बढ़ाने का झांसा दे दुकानदार के खाते से उड़ाए 3 लाख

हरिभूमि न्यूज रोहतक

बैंक खाते की लिमिट बढ़ाने का झांसा देकर साइबर ठगों ने सेक्टर-1 निवासी किराना दुकानदार संजीव के खाते से तीन लाख रुपये निकाल लिए।

पीड़ित के अनुसार, उसके पास बैंक खाते की लिमिट बढ़ाने के नाम पर फोन आया था। फोन करने वाले ने खुद को बैंक से जुड़ा बताया और प्रक्रिया पूरी करने के दौरान संजीव से ओटीपी मांगा।

भरोसा कर ओटीपी साझा करते ही कुछ ही समय बाद उसके खाते से तीन लाख रुपये



बैंक का कर्मचारी बताकर साइबर ठग ने सेक्टर-1 निवासी संजीव को की कॉल

निकल गए। खाते से रकम गायब होने की जानकारी मिलते ही पीड़ित ने पुलिस को शिकायत दी। शिकायत के आधार पर पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। जांच टीम बैंक खाते से हुए लेनदेन, रकम किस खाते में गई और ठगी में इस्तेमाल मोबाइल नंबर की जानकारी जुटा रही है। पुलिस आरोपी की पहचान का प्रयास कर रही है। अधिकारियों ने लोगों से अपील की है कि बैंक संबंधी किसी भी प्रक्रिया के नाम पर अनजान व्यक्ति से ओटीपी, पासवर्ड या अन्य गोपनीय जानकारी साझा न करें।

पार्षदों की सहमति के बिना पास किए जा रहे करोड़ों के प्रस्ताव

हरिभूमि न्यूज रोहतक

रोहतक नगर निगम में विकास कार्यों और वित्तीय फैसलों को गति देने के लिए गठित सब कमेटीयां अब कानूनी विवाद में घिरती नजर आ रही हैं। एक पार्षद ने मुख्यमंत्री को शिकायत भेजकर आरोप लगाया है कि वरिष्ठ उप महापौर और उप महापौर के चुनाव से पहले वित्त एवं अनुबंध समिति (एफएंडसीसी) समेत अन्य कमेटीयां का गठन नियमों के अनुरूप नहीं किया जा सकता। शिकायत में हरियाणा नगर निगम अधिनियम, 1994 का हवाला देते हुए कहा गया है कि एफएंडसीसी में वरिष्ठ उप महापौर और उप महापौर पदेन सदस्य होते हैं।

दोनों पद फिलहाल रिक्त होने के कारण समिति के पूर्ण गठन और उसके फैसलों की वैधानिकता पर सवाल उठाया गया है। शिकायतकर्ता का आरोप है कि कमेटी की



बैठकों में करोड़ों रुपये के विकास कार्यों और अनुबंधों से जुड़े प्रस्ताव अन्य पार्षदों की सहमति के बिना मंजूर किए जा रहे हैं। एफएंडसीसी में महापौर पदेन अध्यक्ष, वरिष्ठ उप महापौर और उप महापौर पदेन सदस्य, सदन द्वारा चुने गए दो पार्षद तथा नगर निगम आयुक्त शामिल होते हैं। ऐसे में निर्धारित सदस्यों के बिना समिति की बैठक और निर्णयों को लेकर भविष्य में कानूनी

निजी विद्यालयों का एमआईएस पोर्टल 25 तक रहेगा खुला

रोहतक। मौलिक शिक्षा निदेशालय, हरियाणा द्वारा निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के संबंध में महत्वपूर्ण निर्देश जारी किए गए हैं। शैक्षणिक सत्र 2026-27 में कुछ निजी विद्यालयों का एमआईएस पोर्टल सीट डिक्लेरेशन/मात्र्यता संबंधी आवश्यक दस्तावेज पोर्टल पर अपलोड न किए जाने के कारण अस्थायी रूप से बंद कर दिया गया था। ऐसे निजी विद्यालयों द्वारा खेल प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले विद्यार्थियों के दाखिले संबंधी विवरण एमआईएस पोर्टल पर अपलोड करने के अनुरोध को ध्यान में रखते हुए विभाग ने इन विद्यालयों के लिए 21 अगस्त से 25 अगस्त 2026 तक एमआईएस पोर्टल पुनः खोलने का निर्णय लिया है। जिले के सभी संबंधित निजी विद्यालयों को निर्देश दिए गए हैं कि वे निर्धारित अवधि के दौरान खेल प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले विद्यार्थियों के दाखिले संबंधी आवश्यक विवरण एमआईएस पोर्टल पर अनिवार्य रूप से अपलोड करना सुनिश्चित करें। निर्देशों के अनुसार 25 अगस्त के बाद 26 अगस्त से संबंधित विद्यालयों का एमआईएस पोर्टल पुनः अस्थायी रूप से बंद कर दिया जाएगा। सभी संबंधित विद्यालय निर्धारित समय-सीमा का विशेष ध्यान रखते हुए आवश्यक प्रक्रिया समय पर पूरी करें। विद्यार्थियों के हित को ध्यान में रखते हुए सभी निजी विद्यालय प्रबंधन से अपील की गई है कि वे विभाग द्वारा निर्धारित अवधि के भीतर आवश्यक कार्रवाई बिना किसी देरी के पूरी करना सुनिश्चित करें।

नगर निगम में बनाई गई सब कमेटीयों पर उठे सवाल, सीएम को भेजी शिकायत

मुख्यमंत्री को भेजी गई शिकायत, आरोप सीनियर डिप्टी मेयर और डिप्टी मेयर के चुनाव से पहले नहीं बनाई जा सकती कमेटीयां

दूसरे कई नगर निगम में भी उठ चुका मामला, अम्बाला में अधिवक्ता ने भेजा है निगम को नोटिस

आपत्ति उठ सकती है।मामला अब रोहतक तक सीमित नहीं है। अम्बाला में भी एक अधिवक्ता ने कमेटीयों के गठन और अधिकारों पर नगर निगम को नोटिस भेजा है। अब राज्य सरकार और शहरी स्थानीय निकाय विभाग के रुख पर नजर है। शिकायत पर कार्रवाई होने पर पहले से लिए गए फैसलों की समीक्षा का रास्ता खुल सकता है।

एमडीयू विद्यार्थियों ने युवा उद्यमी चौपाल में सीखे स्टार्टअप के गुर

जेनएच स्टार्टअप समिट'26 में 20 विद्यार्थियों ने लिया हिस्सा



रोहतक। महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय (एमडीयू) के करीब 20 विद्यार्थियों ने गुरुग्राम में आयोजित जेनएच स्टार्टअप समिट'26 में युवा उद्यमी चौपाल में भाग लेकर स्टार्टअप, नवाचार और उद्यमिता के गुर सीखे। इस कार्यक्रम का शुभारम्भ हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने किया। एमडीयू के विद्यार्थियों के दल ने विभिन्न सत्रों और मास्टर क्लासेज में स्टार्टअप आइडिया को परखने, सीमित संसाधनों में उद्यम शुरू करने, एआई आधारित बिजनेस मॉडल, किफायती समाधानों को बड़े स्तर पर विकसित करने तथा बाजार और ग्राहकों तक पहुंच बनाने जैसे विषयों पर व्यावहारिक जानकारी हासिल की।

बाजार की जरूरतों को समझा

समिट में एमडीयू के विद्यार्थियों को प्रतिष्ठित स्टार्टअप फाउंडर्स, निवेशकों और इंडस्ट्री लीडर्स से सीधे संवाद का अवसर मिला। उन्होंने स्टार्टअप की चुनौतियों, निवेश और बाजार की जरूरतों को समझा तथा अपने विचारों को व्यावसायिक रूप देने की नई दृष्टि हासिल की। आईएचटीएम के प्रोफेसर डॉ. आशीष दहिया विद्यार्थियों के इस दल के इंचार्ज रहे। सेंटर फॉर बायोइनफॉर्मेटिक्स के प्रो. अजीत कुमार ने विश्वविद्यालय के नोडल अधिकारी के रूप में इस विजिट का समन्वयन किया।

तकनीकी स्टाफ को मुंशी के काम से हटाने के निर्देश

हरिभूमि न्यूज रोहतक

उत्तर हरियाणा बिजली वितरण निगम ने जेई, फीडर इंचार्ज और एएफएम के अधीन कार्यालयों में मुंशी, क्लेरिकल व रिपोर्ट कीपिंग जैसे गैर-तकनीकी कार्यों में लगाए गए तकनीकी कर्मचारियों को तत्काल उनके मूल तकनीकी एवं फील्ड कार्यों में लौटाने के निर्देश दिए हैं। 20 अगस्त को जारी मेमो में निगम ने कहा कि कार्यालयों में तकनीकी स्टाफ की तैनाती से जरूरी फील्ड और परिचालन कार्य प्रभावित हो रहे हैं। संबंधित सुपरिंटेंडिंग इंजीनियर अपने क्षेत्रों में कर्मचारियों की तैनाती की व्यक्तिगत समीक्षा करेंगे और अनावश्यक गैर-तकनीकी इयूटी से कर्मचारियों को

बिजली निगम ने 20 अगस्त की मेमो में कहा

कार्यालयों में तकनीकी स्टाफ की तैनाती से जरूरी फील्ड और परिचालन कार्य प्रभावित हो रहे

मुक्त कराएंगे। निगम ने स्पष्ट किया कि क्लेरिकल स्टाफ की गंभीर कमी होने पर ही तकनीकी कर्मचारी को अत्यंत आवश्यक स्थिति में अस्थायी तौर पर गैर-तकनीकी कार्य दिया जा सकेगा। ऐसी व्यवस्था न्यूनतम स्तर पर रहेगी और इसे नियमित व्यवस्था नहीं माना जाएगा।

कल तक भेजनी है रिपोर्ट

निगम ने सभी संबंधित अधिकारियों को निर्देशों की तत्काल पालना करने को कहा है। साथ ही तकनीकी कर्मचारियों को गैर-तकनीकी कार्यों से हटाने के बाद उसकी रिपोर्ट 24 अगस्त को सुबह 10:30 बजे तक भेजने के निर्देश दिए गए हैं। यदि किसी स्थान पर क्लेरिकल स्टाफ की गंभीर कमी के कारण तकनीकी कर्मचारी को अभी भी गैर-तकनीकी काम में रखना जरूरी है तो ऐसे मामलों का पूरा विवरण भी रिपोर्ट में देना होगा। निगम ने इस मामले को सर्वोच्च प्राथमिकता देने के निर्देश दिए हैं। आदेश सख्त प्राधिकारी की स्वीकृति से जारी किया गया है।

बिजली निगम ने फीस 610 रुपये बढ़ाई मीटर के साथ जेब भी जलेगी बदलने के लिए देने होंगे ₹1260

हरिभूमि न्यूज रोहतक

बिजली का मीटर घर में लगा एक ऐसा उपकरण है, जिसकी खराबी अक्सर अचानक सामने आती है। लेकिन अब मीटर जलने या तकनीकी खामी आने पर उसे बदलवाना उपभोक्ताओं के लिए पहले से ज्यादा महंगा साबित होगा। बिजली निगम ने सिंगल फेस मीटर

की निर्धारित कीमत 650 रुपये से बढ़ाकर 1260 रुपये कर दी है। यानी नया मीटर लगवाने के लिए अब ग्राहक को 610 रुपये अतिरिक्त खर्च करने पड़ेंगे।

रेट में इस बदलाव से खासकर उन परिवारों की चिंता बढ़ गई है, जिनके घरों में पुराना मीटर खराब होने या जलने की शिकायत सामने आती है।

करीब दोगुनी हुई राशि

सिंगल फेस मीटर की दर 650 से बढ़कर 1260 रुपये हो गई है। यानी उपभोक्ताओं को अब 610 रुपये अधिक देने होंगे। नई दर पुरानी कीमत से करीब 94 फीसदी ज्यादा है।

94% का इजाफा

सिंगल फेस मीटर की दर 650 से बढ़कर 1260 रुपये हो गई है। यानी उपभोक्ताओं को अब 610 रुपये अधिक देने होंगे। नई दर पुरानी कीमत से करीब 94 फीसदी ज्यादा है।

खराबी से बदेगा खर्च

खराबी होने या जलने पर उपभोक्ता को शिकायत दर्ज करानी होगी। नई दर के चलते मीटर बदलवाने पर 610 रुपये अतिरिक्त खर्च होंगे। इससे खासकर कम आय वाले परिवारों का बजट प्रभावित हो सकता है।

उपभोक्ताओं ने उठाए सवाल

उपभोक्ताओं ने सवाल उठाया कि मीटर की सामान्य खराबी या जलने पर अधिक भुगतान क्यों करें। शुल्क तय करने का आधार स्पष्ट करने की मांग की।

संशोधित दर के अनुसार लिया जा रहा शुल्क



सिंगल फेस मीटर की कीमत निगम की तय नई दरों के अनुसार संशोधित हुई है। पहले 650 रुपये शुल्क लिया जाता था, जबकि वर्तमान दर 1260 रुपये है। खराब अथवा जले हुए मीटर के संबंध में उपभोक्ता को शिकायत दर्ज करवानी होगी। जांच के बाद निर्धारित प्रक्रिया के तहत नया मीटर लगाया जाएगा और लागू शुल्क जमा करवाना होगा। -बिजेन्द्र नरवाल, एसई, बिजली निगम, रोहतक

TATA की पेशकश

TANISHQ X De Berrys Group
For Natural Diamonds

Festival of Diamonds

नेचुरल डायमंड्स से सजे मनमोहक डिजाइन, जो आपकी चमक को सबसे अलग बनाएँ

पलैट 20% छूट
10,000+ डिज़ाइन्स में डायमंड की कीमत पर*

100% क्यूैती*
डायमंड सेलरी खरीदने पर 9 केयर फ्रीडो कम के पुराने सोने के एक्स्चेंज पर।

नया शोरूम :- मानसरोवर पार्क के पास, दिल्ली रोड, रोहतक टेली. : 1800 891 1250

आयोग ने अपील खारिज की

—24 अगस्त तक मांगी रिपोर्ट निगम ने सभी संबंधित अधिकारियों को निर्देशों की तत्काल पालना करने को कहा है। साथ ही तकनीकी कर्मचारियों को गैर-तकनीकी कार्यों से हटाने के बाद उसकी रिपोर्ट 24 अगस्त को सुबह 10:30 बजे तक भेजने के निर्देश दिए गए हैं। यदि किसी स्थान पर क्लेरिकल स्टाफ की गंभीर कमी के कारण तकनीकी कर्मचारी को अभी भी गैर-तकनीकी काम में रखना जरूरी है तो ऐसे मामलों का पूरा विवरण भी रिपोर्ट में देना होगा। निगम ने इस मामले को सर्वोच्च प्राथमिकता देने के निर्देश दिए हैं। आदेश सख्त प्राधिकारी की

Talk to our jewellery expert to know more ☎ 1800 2966 677 Buy online at tanishq.co.in or Download our App 📱 *Conditions apply. For T&C visit our website.

आपसी संवाद का बदलता मिजाज खो ना जाए रिश्तों की मिठास



कवर स्टोरी
रशीधरा भटनागर

भाषा केवल बोलने का माध्यम नहीं, मनुष्य के भीतर से दूसरे मनुष्य तक जाने वाली वह महीन डोर है, जिसमें समय, संस्कार, स्मृतियाँ और संबंध एक साथ बंधे रहते हैं। किसी समाज की भाषा को सुनकर उसके समय की धड़कन पहचानी जा सकती है। शब्द बदलते हैं तो केवल शब्द नहीं बदलते, उनके साथ हमारे व्यवहार, हमारी निकटताएँ और कभी-कभी हमारी संवेदनाएँ भी अपना रूप बदल लेती हैं।

भाषा में होता था माधुर्य

एक समय था, जब मोहल्ला एक परिवार जैसा होता था और मोहल्ले की अपनी एक लोकभाषा हुआ करती थी। वह किसी व्याकरण की पुस्तक में नहीं मिलती थी, फिर भी उसमें जीवन का पूरा व्याकरण समाया होता था। पड़ोस की चाची, गली के काका, सामने वाले घर की दादी, दूध वाले भैया, डाकिया चाचा। रक्त-संबंध न होते हुए भी भाषा ने सबको रिश्तों में बांध रखा था। किसी के घर से पकवान निकला तो कटोरी पड़ोस में पहुँची। किसी के यहां कोई दुःख-परेशानी आई तो अगले बरताने से आवाज आती, 'कुछ चाहिए तो बताना।' किसी बुजुर्ग को देखते ही बच्चे का स्वर अपने आप नीचे हो जाता था। 'आप', 'आइए', 'बैठिए', 'खाइए', 'कैसे हैं?... ' ये केवल शब्द नहीं बल्कि बुझने के अस्तित्व को स्वीकार करने के संस्कार हुआ करते थे। मोहल्ले की उस भाषा में एक सहज माधुर्य था। उसमें आत्मीयता थी, पर आत्मीयता की भी एक मर्यादा थी। मजाक था, मगर अपमान नहीं। असहमति थी,

मगर संबोधन में सम्मान बचा रहता था। आज मोहल्ले सिकुड़कर अपार्टमेंट हो गए हैं और चौपाल स्क्रीन पर चली गई है। पड़ोसी का चेहरा कई बार वर्षों तक दिखाई नहीं देता, जबकि दूर देश में रहने वाला कोई डिजिटल मित्र प्रतिदिन बातचीत का हिस्सा बना रहता है। भाषा भी उसी के साथ बदल गई है।

नई पीढ़ी की बेलाग भाषा

आज जब हम नई पीढ़ी की भाषा की बात करते हैं, तो चर्चा केवल 'हाय', 'हेलो' 'ओके', 'कूल' 'ब्रो' या डिजिटल संक्षिप्तियों तक सीमित नहीं रह सकती है। इस भाषा का एक दूसरा, अधिक चिंताजनक पक्ष है बातचीत में बढ़ती बेलाग अशिष्टता, गाली-गलौज और अपशब्दों का सहज इस्तेमाल।

लेकिन इसे केवल 'आज के बच्चों के संस्कार खराब हैं' कहकर समझ लेना समस्या को बहुत छोटा कर देना होगा। आज युवाओं की



बातचीत में अपशब्दों का इस्तेमाल कई संदर्भों में सामान्य होता दिखाई देता है। शोध यह संकेत देते हैं कि युवाओं में अपशब्दों का प्रयोग केवल 'असंस्कारी' होने का परिणाम नहीं होता। कभी यह भावनाओं को तीव्रता से व्यक्त करने, कभी समूह में स्वीकार्यता पाने और कभी अपनी बात

घर-परिवार हो, पड़ोसी, मित्र-मंडली, सहकर्मी हों या रिश्तेदार, सभी से संबंध, हमारे बातचीत के तरीके और शब्दों पर निर्भर करते हैं। समय के साथ शब्द, संबोधन, भाषा की चाल बदलना स्वाभाविक है, लेकिन भाषा से यदि सम्मान और मर्यादा का भाव कम होने लगे तो रिश्तों की ऊष्मा, उसकी मिठास खोने का डर मंडराने लगता है। ऐसे में हम सभी को सजग होने की जरूरत है।



को अधिक प्रभावशाली बनाने का माध्यम बन जाता है। सोशल मीडिया ने युवाओं को अपनी बात खुलकर रखने के बहुत अधिक अवसर दिए हैं और इसके साथ अशिष्ट भाषा की दुर्यता भी बढ़ी है। यानी समस्या केवल शब्दों की नहीं, शब्दों के सामान्य हो जाने की है। दरअसल, जब किसी शब्द को बार-बार सुना जाता है, तो उसका चौंकाने वाला प्रभाव कम होने लगता है। जो कल असभ्य माना जाता था, वह आज मजाक का हिस्सा बन जाता है। और जो मजाक में कहा गया था, वह धीरे-धीरे रोजमर्रा की भाषा में प्रवेश कर जाता है।

समझना होगा महत्वपूर्ण अंतर

हर अपशब्द हिंसा नहीं है और हर अपशब्द किसी व्यक्ति को अपमानित करने के लिए नहीं बोला जाता। भाषा-विज्ञान और मनोविज्ञान के अध्ययनों में यह भी पाया गया है कि लोग कभी-कभी ऐसे शब्दों का इस्तेमाल भावनात्मक तीव्रता, तनाव या आश्चर्य व्यक्त करने के लिए करते हैं। लेकिन किसी की



गरिमा को चोट पहुंचाने वाली गाली और मित्रों के बीच भावनात्मक विस्मय व्यक्त करने वाला अपशब्द एक ही बात नहीं हैं। यहीं भाषा की नैतिकता का प्रश्न खड़ा होता है। आखिर यह भाषा आई कहां से? इस बदलाव के पीछे कई परतें हैं।

डिजिटल दुनिया: सोशल मीडिया, ऑनलाइन गेमिंग, छोटे वीडियो और मीम संस्कृति में तीखी, उत्तेजक और चौंकाने वाली भाषा अकसर मनोरंजन का हिस्सा बन जाती है।

साधियों का प्रभाव: किशोरावस्था में समूह से जुड़ना बहुत महत्वपूर्ण होता है। कोई शब्द मित्र-मंडली में सामान्य है तो उसे न बोलना कई बार 'अलग' दिखाई देना हो सकता है। इसलिए युवा भाषा केवल व्यक्तिगत पसंद नहीं, समूह की पहचान भी बन जाती है।

घर की भाषा: हम अकसर बच्चों की भाषा पर अंगुली उठाते हैं, लेकिन यह भूल जाते हैं कि भाषा सीखने की पहली पाठशाला घर है। यदि घर में क्रोध का पहला उतर गाली है, तो बच्चे के लिए गाली केवल निषिद्ध नहीं, समूह की पहचान भी बन जाती है।

ध्यान रखने की प्रवृत्ति: बेलाग भाषा कई बार 'कूल', 'बोल्ड' या 'बेबाक' दिखने का माध्यम बन जाती है। इसीलिए कुछ युवा जान-बूझकर ऐसी भाषा चुनते हैं। **संवाद का घटता धैर्य:** जब बातचीत छोटी होती जाती है, तो भाव व्यक्त करने के लिए शब्दों की जगह तीव्र शब्द लेने लगते हैं। इन सभी कारणों को समझने के बाद विकृत होती भाषा के लिए केवल नई पीढ़ी को दोष देना उचित नहीं होगा, क्योंकि भाषा का यह परिवर्तन केवल युवाओं ने पैदा नहीं किया है। उन्हें यह भाषा समाज ने दी है।

भाषा में बनी रहे मधुरता-मर्यादा

हमें पुरानी भाषा को हूबहू वापस लाने की आवश्यकता नहीं है। नई पीढ़ी को अपनी भाषा होगी ही। जरूरत केवल इतनी है कि आधुनिकता के साथ माधुर्य भी रहे और बेबाकी के साथ मर्यादा भी। प्रश्न शब्द का नहीं, उसके पीछे मौजूद मन का है। हम न भूलें कि शब्दों में अद्भुत शक्ति होती है। वे रिश्तों में मिठास घोल सकते हैं तो हमेशा के लिए खटास भी भर सकते हैं। *

मानसिक स्वास्थ्य को मजबूत बनाएं भाई-बहन का भावनात्मक संबल

हर परिवार में भाई-बहन का रिश्ता सबसे अनोखा और प्यारा होता है। उम्र के हर दौर में भाई-बहन का एक-दूसरे को दिया जाने वाला भावनात्मक संबल, मानसिक स्वास्थ्य को मजबूत बनाने में भी बड़ी भूमिका निभाता है। इस बारे में आप विस्तार से जरूर जानना चाहेंगे।

पॉजिटिव इफेक्ट नैसी गुप्ता

बदली जीवनशैली, बढ़ता काम का दबाव, सोशल मीडिया की तुलना और अकेलेपन की भावना आज मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारण बन चुके हैं। ऐसे समय में परिवार का भावनात्मक सहयोग, हर व्यक्ति के लिए सबसे बड़ी ताकत साबित होता है। परिवार में भाई-बहन का रिश्ता सबसे अलग और प्यारा होता है, क्योंकि यह केवल बचपन की यादों तक सीमित नहीं रहता, बल्कि जीवन के हर पड़ाव पर भावनात्मक सुरक्षा, भरोसा और अपनापन भी देता है। भाई-बहन का रिश्ता दोनों के मानसिक स्वास्थ्य को मजबूत बनाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

भावनात्मक सुरक्षा: बचपन के बाद टीनएज, यंगएज और मिडएज में भाई-बहन दोस्त जैसे हो जाते हैं, जिससे वे बिना किसी झिझक के अपनी भावनाएं साझा कर लेते हैं। जब जीवन में तनाव, असफलता या किसी तरह की परेशानी आती है, तो भरोसेमंद भाई या बहन का साथ मानसिक बोझ को काफी हद तक कम कर देता है। यह भावनात्मक सुरक्षा, चिंता और अकेलेपन की भावना को घटाने में मदद करती है।

तनाव होता है कम: मानसिक तनाव के दौरान किसी भरोसेमंद व्यक्ति से बात करना काफी राहत देता है। भाई-बहन एक-दूसरे की परिस्थितियों, स्वभाव और पारिवारिक पृष्ठभूमि को अच्छी तरह समझते हैं। इसलिए वे बिना जज किए सुनते हैं और व्यावहारिक सलाह भी देते हैं। यह सहयोग तनाव से बाहर निकलने में सहायक हो सकता है। **अकेलापन महसूस हो कम:** आज के समय में अनेक युवक-युवतियां, परिवार से दूर रहकर पढ़ाई



या नौकरी करते हैं। ऐसे में अकेलेपन की समस्या बढ़ सकती है। ऐसे में यदि भाई-बहन के साथ नियमित बातचीत होती रहे, तो दूरी के बावजूद भावनात्मक जुड़ाव कायम रहता है। फोन कॉल, वीडियो कॉल या संदेश भी मानसिक सुकून देने का काम करते हैं। **बढ़ता है आत्मविश्वास:** हर व्यक्ति के जीवन में ऐसे पल आते हैं जब उसे अपनी क्षमता पर संदेह होने लगता है। ऐसे समय में भाई या बहन का प्रोत्साहन आत्मविश्वास को दोबारा मजबूत कर सकता है। बचपन से एक-दूसरे की खूबियाँ और कमजोरियों को जानने के कारण, उनका उत्साहवर्धन अधिक प्रभावी महसूस होता है।

कठिन समय में सहारा: मानसिक स्वास्थ्य केवल भावनाओं तक सीमित नहीं है। बीमारी, आर्थिक परेशानी या पारिवारिक संकट के समय भाई-बहन, भावनात्मक समर्थन के साथ-साथ व्यावहारिक मदद भी करते हैं। जिम्मेदारियां बांटना, निर्णय लेने में साथ देना और समस्याओं का समाधान ढूंढना मानसिक दबाव को कम करने में मदद करता है।

मिलती है सकारात्मक ऊर्जा: बचपन की सुखद यादें मानसिक स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव डालती हैं। भाई-बहन के साथ बिताए गए खेल, त्योहार, शरारतें और पारिवारिक अनुभव कठिन समय में भी व्यक्ति को भावनात्मक रूप से मजबूत महसूस कराते हैं। कहा जा सकता है कि भाई-बहन का रिश्ता केवल खून का रिश्ता नहीं, बल्कि जीवन भर साथ रहने वाला भावनात्मक सहारा भी है। बदलते समय में जब मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ी चुनौतियां लगातार बढ़ रही हैं, तब यह रिश्ता हमें अपनापन और आत्मविश्वास देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। * (क्लिनिकल साइकोलाजिस्ट निर्मल वर्मा से बातचीत पर आधारित)

रिश्ता बनाए रखें मजबूत

भाई-बहन के बीच केवल रिश्ता होना ही पर्याप्त नहीं होता है, बल्कि मजबूती बनाए रखने के लिए उसे समय देना भी जरूरी है। व्यस्त दिनचर्या के बावजूद नियमित बातचीत करें, एक-दूसरे की उपलब्धियों की सराहना करें, मतभेद होने पर संवाद बनाए रखें और छोटी-छोटी बातों को लंबे समय तक मन में न रखें। स्वस्थ संवाद रिश्ते को मजबूत बनाता है और मानसिक संतुलन बनाए रखने में भी मदद करता है। इसके साथ ही रक्षाबंधन, जन्मदिन या परिवार के छोटे-छोटे समारोह, भाई-बहन को फिर से करीब लाने का अवसर देते हैं। ऐसे अवसरों को मिस न करें। इस दौरान साथ समय बिताना, पुरानी यादें साझा करना, उत्साह के पल बिताना और एक-दूसरे का हाल-चाल जानना भावनात्मक जुड़ाव को मजबूत करता है। कई परिवारों में भाई-बहनों के बीच तुलना की जाती है, जिससे तनाव, ईर्ष्या और आत्मसमझन से जुड़ी समस्याएं पैदा हो सकती हैं। इसके बजाय एक-दूसरे की सफलता का सम्मान करना और शुभिकल समय में सहयोग देना रिश्ते को अधिक सकारात्मक बनाता है। भाई-बहन के बीच रखे संबंध मानसिक स्वास्थ्य के लिए हमेशा लाभदायक होते हैं।



गजल
ओम निश्चल

राखी आ गई

फिर उमड़ आई बरन की याद राखी आ गई
फिर से पकवानों में आया स्वाद राखी आ गई

थाल में कुमकुम और रोली सज गई
हृदय में उठ रहा है आह्लाद राखी आ गई

गुनगुनाने-सा लगा है फिर ये घर
फिर हुआ है नायक आबाद राखी आ गई

चैनलों पर गीत गाए जा रहे
छंट गया है जेलन से श्रवसाद राखी आ गई

बंध गई हैं राखियां फिर हाथ में
बरन-भाई कर रहे संवाद राखी आ गई

एक धागे में जो चाहे बांध लो
भाईघर का यही मरजाद राखी आ गई

लघुकथाएं

शदी के कुछ दिन बाद ही विदेश जा बसी बहू ने, सुबह-सुबह फोन की घंटी बजते ही अनमने मन से अपनी सास का कॉल रिसीव किया, बोली, 'प्रणाम मां जी, कैसी हैं आप?' सासू मां बोलीं, 'अरे बहू, रक्षाबंधन पर अपने भाई की राखी भेजना मत भूलना। शदी के बाद पहली राखी है, तुम्हारे घर पर सब इंतजार करेगे।' 'जी मां जी, भेज दूंगी, आप चिंता ना करें।' उसने सधी-सपाट आवाज में जवाब दिया और फोन रखते ही सोचने लगी, 'फोन, चैट, वाट्सएप सब तो चलता ही रहता है, मैं कौन-सी भाई से साल में एक बार मिलती हूं? इस साल ही तो दूर आई हूं। राखी भेजने की औपचारिकता करना ही क्या जरूरी है?' बाद में वह घर-ऑफिस के कामों में ऐसा उलझी कि यह भूल ही गई रक्षाबंधन है कब? रक्षाबंधन के दिन सुबह-सुबह भाई ने अपनी कलाई पर सजी सुंदर राखी की फोटो भेजी और एक प्यारा-सा संदेश भी। 'कितना खुश हूं मैं कि वहां जाकर भी तुम्हें राखी का त्योहार याद रहा, अपने भाई के लिए स्नेह की डोर भेजना न भूलो। देख तो दूर रहकर भी हमारे बीच कभी दूरियां नहीं आएंगी। यह रेशमी धागा हमें हमेशा बांधे रखेगा।' फिर फोन पर बात हुई तो भाई-बहन दोनों का गला रंध गया। आंखों में नमी लिए खुशी से कांपते हाथों से उसने सासू मां को फोन लगाया तो उन्होंने

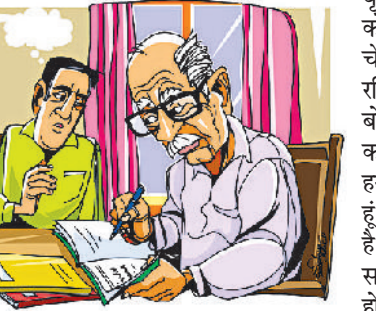
वृद्धाश्रम में रहने वाले एक बुजुर्ग रोज सुबह सबसे पहले वहां का उपस्थिति रजिस्टर खोलते और कांपते हाथों से अपने नाम के सामने हस्ताक्षर करते थे। एक दिन वहां मौजूद एक स्वयंसेवक ने उत्सुकता से पूछा, 'अंकलजी, यहां तो कोई रोज जांच भी नहीं करता, फिर आप हर दिन रजिस्टर में हस्ताक्षर क्यों करते हैं?' बुजुर्ग हल्का-सा मुस्कुराए और बोले, 'आदत है बेटा बरसों पुरानी आदत।' कुछ पल चुप रहने के बाद उनकी आंखें कहीं दूर टिक गईं, फिर धीमे स्वर में बोले, 'पूरी जिंदगी बैंक के कागजों पर, जमीन के दस्तावेजों पर, मकान के रजिस्ट्री पेपर्स पर, न जाने कितनी बार हस्ताक्षर करता आता। हर हस्ताक्षर किसी न किसी जिम्मेदारी या अधिकार का प्रतीक था। लेकिन जिस दिन आखिरी

कच्ची डोर



चहकते हुए पूछा, 'राखी बांध ली भाई ने?' 'जी मां जी, पर...' बहू आगे कुछ पूछती, उधर से सास बोली, 'अरे बहू, राखी मैंने भेजी थी। चार दिन पहले ही राजेश ने बताया कि तुम राखी नहीं भेज पाई हो।' कुछ ठहरकर उन्होंने फिर कहा, 'बहू, कच्ची डोर से बंधे रिश्ते भी टूटते नहीं, बस यह डोर कच्ची ना पड़े, इतना ख्याल रखना जरूरी होता है।' *

हस्ताक्षर



बार समझा- सबसे कठिन हस्ताक्षर वे नहीं होते जो संपत्ति बांटते हैं, बल्कि वे होते हैं, जो हर दिन खुद के अस्तित्व का प्रमाण देते हैं। *

—कृति आर.के. जैन

कच्ची डोर

मकान भी बेटे के नाम कर दिया, उसी दिन मेरे नाम का कमरा बदल गया और मैं इस वृद्धाश्रम में आ गया।' स्वयंसेवक के पास कोई शब्द नहीं बचे। वह केवल बुजुर्ग के चेहरे को देखता रह गया। बुजुर्ग ने धीरे से रजिस्टर बंद किया, गहरी सांस ली और बोले, 'अब यहां रोज इसलिए हस्ताक्षर करता हूं, ताकि कम से कम एक जगह तो हर दिन यह दर्ज होता रहे कि मैं अभी जिंदा हूं, मेरा अस्तित्व अभी पूरी तरह मिटा नहीं है।' यह सुनते ही रजिस्टर का वह साधारण-सा पन्ना अचानक बहुत भारी हो गया। उस दिन स्वयंसेवक ने पहली बार समझा- सबसे कठिन हस्ताक्षर वे नहीं होते जो संपत्ति बांटते हैं, बल्कि वे होते हैं, जो हर दिन खुद के अस्तित्व का प्रमाण देते हैं। *

समाप्त होता जा रहा है। करुणा वही परिवर्तनकारी शक्ति है, जो हमें इन समस्याओं से उबार सकती है। किताब में करुणा की नई परिभाषा से हम रूबरू होते हैं। करुणा कोई मामूली भावना नहीं बल्कि हमें बड़ी से बड़ी समस्या के समाधान तक पहुंचाने वाली ताकत है। न्याय की आत्मा है, बुद्धि का सर्वश्रेष्ठ स्वरूप है। लेखक ने करुणा के इतने आयामों से हमारा परिचय कराया है, जिसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते। किस तरह जीवन के हर क्षेत्र में करुणा को लागू कर हम एक खुशहाल जिंदगी जी सकते हैं? किस तरह करुणा को मापा जा सकता है और किस तरह इसे अपने भीतर बढ़ाया भी जा सकता है? कुल मिलाकर करुणा में एक बेहतर दुनिया के निर्माण की शक्ति निहित है। *

—कृति आर.के. जैन

पुस्तक चर्चा / सरस्वती रमेश

करुणा की शक्ति

वर्तमान समय का सबसे ज्वलंत सवाल यह है कि युद्ध, हिंसा, गैरबराबरी, अन्याय, शोषण जैसी वैश्विक चुनौतियों का समाधान क्या हो सकता है? इस सवाल का मुकम्मल जवाब है नोबेल शांति पुरस्कार से सम्मानित कैलाश सत्यार्थी की किताब 'करुणा-समाधान की शक्ति'। आज हमारी सभ्यता जितनी तेजी से विकास के नए आयाम गढ़ रही है, उतनी ही तेजी से चुनौतियों के दलदल में फंसती भी जा रही है। मनुष्य तकनीकी रूप से जितना सक्षम हो रहा है, सामाजिक रूप से उतना ही विपन्न भी होता जा रहा है। यहाँ तक कि अपने आप से भी उसका संबंध

करुणा

समाधान की शक्ति

कैलाश सत्यार्थी

किताब: करुणा-समाधान की शक्ति, लेखक: कैलाश सत्यार्थी, अनुवाद: आशुतोष गर्ग, मूल्य: 399 रुपये, प्रकाशक: हार्पर हिंदी, गुप्तग्राम

देश के कोने-कोने का भरोसा

2 करोड़+ मंशरूम पाउडर

आपके नज़दीकी सभी मेडिकल स्टोर पर उपलब्ध।
Availability at: www.mynushroomworld.com
Amazon | Flipkart

वज़न बढ़ाने में सहायक

मशरूम एवं 12+ जड़ी-बूटियाँ

10 दिनों में अस्तर देखें

क्योंकि वज़न है, तो वज़नवारी है!

Mushroom World Ayurved & Food Pvt. Ltd. For Trade Enquiry + 91 888 922 3333

धार्मिक-सांस्कृतिक उत्सव

केरल का बहुरंगी महापर्व ओणम

फूलों की रंगोलियों से सजे आंगन, सर्प नौकाओं की रोमांचक दौड़, लोकनृत्यों की थिरकन और केले के पते पर परोसा गया ओणसदा। ओणम में केरल की संस्कृति अपने सबसे जीवंत रूप में नजर आती है। राजा बलि की पौराणिक गाथा से जुड़ा यह पर्व आस्था, प्रकृति से जुड़ाव, परंपरा, सामाजिक समरसता और पारिवारिक एकता का अद्भुत संगम है। विगत सप्ताह आरंभ हो चुके इस सांस्कृतिक उत्सव की विशिष्टताओं पर एक नजर।

पर्वाँल्लास / धीरज बसाक

यदि उत्तर भारत में होली, रंगों का उत्सव है, पश्चिम भारत में गुजरात का नवरात्र लोकनृत्यों का उत्सव है और पश्चिम बंगाल की दुर्गा पूजा आस्था का विराट आयोजन है, तो कह सकते हैं

इन सभी रंगों और उत्सवों के महासंगम जैसा है-ओणम। दस दिनों तक मनाए जाने वाले इस पर्व के दौरान पूरा केरल मानो एक विशाल सांस्कृतिक रंगमंच में बदल जाता है- जहां फूलों की रंगोलियां (पुक्कलम), सर्प नौकाओं की रोमांचक दौड़, कथकली और पुलिकली जैसे लोकनृत्य, पारंपरिक संगीत, सामूहिक भोज (ओणसदा) तथा महाबलि की लोकगाथा, ये सब मिलकर एक अद्भुत उत्सवी वातावरण रचते हैं। दस दिनों तक मनाए जाने वाले ओणम का अंतिम उत्सव दिन इस साल 26 अगस्त को संपन्न होगा।

भारतीय संस्कृति की जीवंत पहचान: ओणम केवल एक धार्मिक पर्व नहीं है बल्कि यह केरल की लोककला, सामाजिक समरसता, पारिवारिक एकता और प्रकृति के प्रति कृतज्ञता का महा उत्सव भी है। शायद यही कारण है कि ओणम आज केरल की सीमाओं से निकलकर भारतीय संस्कृति की जीवंत पहचान का हिस्सा हो चुका है, जहां उत्सव केवल मनाया नहीं जाता बल्कि जीवन का हिस्सा बन जाता है।

पर्व मनाने की पौराणिक मान्यता: पौराणिक मान्यता के अनुसार एक समय में केरल में राजा महाबलि का शासन हुआ करता था। महाबलि बेहद न्यायप्रिय, दयालु और प्रजावत्सल शासक थे। कहा जाता है कि उनके राज्य में कोई गरीब नहीं था। किसी के साथ कोई भेदभाव नहीं होता था और सभी लोग सुखी थे। देवताओं के आग्रह पर भगवान विष्णु ने वामन अवतार धारण कर महाबलि की दयालुता और दानवीरता की परीक्षा लेने



पारंपरिक वेशभूषा में ओणम मनाते स्थानीय कलाकार

हेतु तीन पग भूमि मांगी। जब महाबलि ने कहा आप नाप लें, तो वामन के अवतार में भगवान विष्णु ने दो पगों में पृथ्वी और आकाश को नाप लिया और अब तीसरे पग के लिए कहीं कोई जगह नहीं थी, तो महाबलि ने अपना सिर प्रस्तुत कर दिया। इस पर भगवान विष्णु ने बलि की भक्ति और त्याग से प्रसन्न होकर उन्हें वरदान दिया कि वह वर्ष में एक बार अपनी प्रजा से मिलने आया करेंगे। वास्तव में ओणम का उत्सव उनके आगमन की खुशी का उत्सव है। यह पौराणिक कथा केवल धार्मिक आस्था की नहीं बल्कि आदर्श शासन-व्यवस्था, समानता, न्यायप्रियता, त्याग और जनकल्याण का संदेश देती है।

हर दिन होता है कुछ खास: ओणम की शुरुआत में सबसे पहले घरों के आंगन में फूलों की



ओणम की सांस्कृतिक पहचान है सर्प नौका दौड़

रंगोलियां बनाई जाती हैं। प्रत्येक दिन रंग-बिरंगे फूलों से सजने वाली यह रंगोली प्रकृति के प्रति प्रेम और सौंदर्यबोध का प्रतीक है। फूलों की इन रंगोलियों को यहां की स्थानीय भाषा में पुक्कलम कहा जाता है। ओणम के दौरान पारंपरिक नृत्य तिरुवात्तराकली, कुम्माट्टिकली, पुलिकली (बाघ नृत्य) और कथकली की प्रस्तुतियां पूरे राज्य में आकर्षण का केंद्र बनती हैं। लोकगीतों की मधुर धुनों और पारंपरिक वाद्ययंत्रों की गूंज से इस दौरान केरल के गांव और शहर झूम उठते हैं। इसी समय होने वाली केरल की प्रसिद्ध वल्लमकली (सर्प नौका दौड़) तो विश्व भर में ओणम की सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक बन चुकी है। इन लंबी-लंबी नौकाओं के अगले सिरे सांप के फन जैसे होते हैं। इनमें सैकड़ों नाविक एक साथ पूरे तालमेल

के साथ चप्पू चलाते हैं। यह केवल प्रतियोगिता नहीं है बल्कि सामूहिकता, अनुशासन और टीम भावना का प्रदर्शन है।

धार्मिक-सामाजिक समभाव का पर्व: ओणम की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह किसी एक धर्म या एक समुदाय का पर्व नहीं है। केरल में हिंदू, मुस्लिम, ईसाई और अन्य समुदाय के लोग भी इसे पूरे सम्मान और उत्साह से मनाते हैं। ओणम का महत्वपूर्ण सामाजिक पक्ष यह है कि यह वर्ग, जाति और धर्म की सीमाओं को पीछे छोड़कर लोगों को एक सूत्र में बांधता है। दस दिनों के इस उत्सव में लोग एक-दूसरे के घर जाते हैं, सामूहिक सांस्कृतिक कार्यक्रमों में हिस्सा लेते हैं और सामूहिक भोज का आनंद उठाते हैं। यही कारण है कि ओणम को सामाजिक समरसता और पारिवारिक एकता का भी महापर्व कहा जाता है।

सबके साथ ओणसदा का आनंद: ओणम का जिक्र ओणसदा के बिना अधूरा है। केले के पते पर परोसा जाने वाला यह पारंपरिक भोज केवल भोजन नहीं है, यह केरल की पाक संस्कृति का भी उत्सव है। इसमें अनेक प्रकार की सब्जियां, सांभर, अलियल, ओणम, थोरण, अचार, पापड़ और अंत में पायसम परोसा जाता है। इस भोजन की विशेषता यह होती है कि इसमें स्वाद के साथ संतुलित पोषण और सामूहिक भोजन की भावना भी शामिल होती है। परिवार व मित्र एक साथ बैठकर भोजन करते हैं, जिससे आपसी संबंध और मजबूत होते हैं।

कृषि-प्रकृति से संबंध का प्रतीक: ओणम चूँकि वर्षा ऋतु के बाद अच्छी फसल आने की

खुशी का पर्व है, इसलिए इसका गहरा संबंध कृषि और प्रकृति से भी है। इस पर्व में की जाने वाली फूलों की सजावट, हरियाली, नई फसल और प्राकृतिक संसाधनों के प्रति सम्मान इस पर्व की प्रमुख विशेषता है। आज जब पर्यावरण संरक्षण पूरी दुनिया की चिंता बन चुका है, तब ओणम हमें प्रकृति के साथ संतुलित जीवन जीने की प्रेरणा देता है। *

एक सवाल हम सभी को अकसर परेशान करता है कि अगर हम आगे बढ़ना चाहते हैं, प्रगति के साथ सकारात्मक बदलाव करना चाहते हैं तो फिर अपनी जिंदगी में मनचाहा बदलाव क्यों नहीं ला पाते हैं? इसका जवाब हमें ठहरकर अपने भीतर ही खोजना होगा।



आप अपनी जिंदगी में क्यों नहीं बढ़ पा रहे आगे

सेल्फ मोटिवेशन
जोगिंदर रोहिल्ला

हम में बहुत से लोग गोल डिसाइड करते हैं। प्लान बनाते हैं। मोटिवेशन की किताबें पढ़ते हैं। अफमेशन करते हैं और अपने भविष्य को विजुअलाइज भी करते हैं। फिर भी जाने क्यों हम वो अचीव नहीं कर पाते हैं। तब अकसर हम दूसरे लोगों को, भाग्य को और परिस्थितियों को दोष देना शुरू करते हैं। सवाल है आखिर हमें आगे बढ़ने से रोकता क्या है?

सोच को रखें पॉजिटिव: डॉ. जो डिस्पेंजा की किताब 'बीकमिंग सुपरनेचुरल' इस बारे में जिंदगी को थोड़ा अलग नजरिए से देखने के लिए प्रेरित करती है। इसमें व्यक्त किया गया एक विचार खासतौर पर ध्यान खींचता है। इसके अनुसार, हमारे विचार और हमारी भावनाएं (इमोशन) हमारे शरीर से गहराई से जुड़ी हुई होती हैं। विचार, भावना को प्रभावित करता है। भावना फिर विचार को प्रभावित करती है। और यह चक्र चलता रहता है। बार-बार ऐसा होने पर यह हमारे लिए जाना-पहचाना बन जाता है। हमारा दिमाग उस पैटर्न को पहचानने लगता है और हम बिना सोचे उसी तरह प्रतिक्रिया देने लगते हैं। वही डर, वही चिंता, वही प्रस्ट्रेशन और वही आत्म-संदेह। वास्तव में हम अपनी जिंदगी को सचेत होकर नहीं जी रहे होते हैं। हम सिर्फ वही दोहरा रहे होते हैं, जो हमारे लिए जाना-पहचाना बन चुका है। इसी विचार को दूसरी कुछ किताबें भी अलग-अलग तरीके से सामने रखती हैं। शक्ति गॉवन की 'क्रिएटिव विजुअलाइजेशन' में बताया गया है कि जब हम अपने लक्ष्य और उस जीवन की एक स्पष्ट तस्वीर अपने मन में बनाते हैं, तो वह हमारी सोच और हमारे कार्र करने के तरीके को प्रभावित कर सकती है। 'द सीक्रेट' किताब ने भी जीवन में सफल होने के लिए विचारों, विश्वास और उम्मीदों के प्रभाव को लोकप्रिय बनाया। वहीं नेपोलियन हिल की 'थिंक एंड

ग्रे रीच' किताब, इच्छा, कल्पना और स्पष्ट उद्देश्य की ताकत पर जोर देती है। सबका सार यही है कि हम जिस दिशा में बार-बार अपने विचार और एनर्जी लगाते हैं, वह हमारी जिंदगी को प्रभावित करने लगती है।

अपना कॉन्सेप्ट रखें क्लीयर: एक जरूरी बात यह भी है कि सिर्फ सकारात्मक सोच काफी नहीं है। आप सुबह कह सकते हैं, 'मेरी जिंदगी बदल रही है।' लेकिन अगर अगले दस घंटे आप चिंता करते रहें, शिकायत करते रहें, खुद पर संदेह करते रहें और हर चीज के गलत होने की कल्पना करते रहें, तो उस सोच का कोई फायदा नहीं होगा। सवाल यह है कि आप वास्तव में खुद के किस रूप की प्रैक्टिस कर रहे हैं? उस व्यक्ति की, जो अब तक दुख, डर को दोहराता आ रहा है या उस इंसान की, जो आप बनना चाहते हैं?

बदलाव के प्रति रहें दृढ़: ट्रांसफॉर्मेशन कुछ हद तक एक तितली की लाइफ साइकिल जैसा होता है। एक कैटरपिलर को तितली बनने के लिए अपने पुराने रूप को छोड़ना पड़ता है। वह हमेशा कैटरपिलर बने रहकर तितली नहीं बन सकता। शायद इंसानों के साथ भी कुछ ऐसा ही है। हमारी बाहरी जिंदगी



बदलने से पहले कई बार हमारे भीतर कुछ बदलना जरूरी होता है। इसलिए जब भी लगे कि मैं किसी नकारात्मक विचार के चक्र में जा रहा हूँ तो रुककर खुद से एक सवाल पूछिए, 'क्या यह विचार मुझे उस इंसान के करीब ले जा रहा है, जो मैं आगे बनना चाहता हूँ?' **एनर्जी को दें सही दिशा:** एक पुरानी बौद्ध शिक्षा हमें याद दिलाती है, 'हम जैसा सोचते हैं, धीरे-धीरे वैसे ही बनते जाते हैं।' आपका बदलाव उस समय शुरू होगा, जब आप उन विचारों, भावनाओं और आदतों को पहचानना शुरू करेंगे, जो आपको पीछे खींच रहे हैं और सचेत होकर उस इंसान की प्रैक्टिस करना शुरू करेंगे, जो आप बनना चाहते हैं। अगर आप अपनी जिंदगी बदलना चाहते हैं, तो शुरुआत नए विचार और नई भावना से करनी होगी। आपका बदलाव बाहर नहीं आपके भीतर, आपके विचार में ही छिपा हुआ है। *

माई-बहन के स्नेह के प्रतीक पर्व रक्षाबंधन को लेकर कई पौराणिक-ऐतिहासिक कथाएं प्रचलित हैं। लेकिन हाल के वर्षों में इस रिश्ते को गहन अर्थ देने वाली, कई ऐसी मार्मिक घटनाएं सामने आईं, जो अपने-आप में मिसाल हैं।

दिल को छूने वाले राखी के अनोखे किस्से



शिवम मिस्त्री को राखी बांधती अनामता अहमद



साठ साल बाद अपने भाइयों से मिली बलेश देवी

कुछ अलग
शिखर चंद जैन

रक्षाबंधन सिर्फ एक राखी या रेशमी धागा बांधने की रस्म भर नहीं, बल्कि मन से जुड़ा बंधन होता है। यह सिर्फ सगे भाई-बहन के बीच नहीं, किसी भी उस शख्स या चीज से स्नेह को दर्शाता है, जिससे भाई की अनुभूति मिलती है। ऐसी ही कुछ घटनाओं के बारे में जानिए।

अंगदान से मिला नया भाई: साल 2025 में अंगदान की एक बड़ी ही भावुक सच्ची घटना सामने आई। 9 साल की एक बच्ची रिया को डॉक्टरों ने ब्रेन-डेड घोषित कर दिया था। रिया के माता-पिता ने एक बेहद साहसिक फैसला लेते हुए उसके अंग दान कर दिए। रिया का हाथ ऑर्गन ट्रांसप्लान्ट के जरिए एक लड़की अनामता अहमद को लगाया गया। 8 अगस्त 2025 को रक्षाबंधन के त्योहार पर, अनामता करीब 200 किलोमीटर का सफर तय करके रिया के घर पहुंची। वहां उसने रिया के सगे भाई शिवम मिस्त्री की कलाई पर उसी हाथ से राखी बांधी, जो कभी उसकी बहन का हुआ करता था। हुआ यह कि मुंबई के गोरगांव की रहने वाली 16 वर्षीय अनामता अहमद ने साल 2022 में बिजली के करंट की चपेट में आने से अपना दाहिना हाथ



सैनिकों के लिए राखियां बनाती स्कूली छात्राएं

खो दिया था। सितंबर 2024 में गुजरात के वलसाड की 9 वर्षीय मासूम बच्ची रिया मिस्त्री को डॉक्टरों ने ब्रेन-डेड घोषित कर दिया था। वलसाड की 'डोनेट लाइफ' एनजीओ की काउंसिलिंग के बाद रिया के माता-पिता ने उसके अंग दान कर दिए। ग्रीन कोरिडोर के जरिए रिया का दाहिना हाथ मुंबई लाया गया और ग्लोबल हॉस्पिटल पर अनामता को ट्रांसप्लान्ट किया गया।

मोडिया की मदद से पुरानी कड़ियों को जोड़ा गया और दोनों परिवारों की पहचान सुनिश्चित की गई। 9 अगस्त 2025 को यह मामला खबरों में आया। **सैनिकों के लिए लाखों राखियां:** देश की सहरदों पर चौबीसों घंटे तैनात रहने वाले भारतीय सेना के जवानों को घर की कमी महसूस न हो, इसके लिए दिल्ली के कई स्कूलों के छात्रों ने मिलकर कुछ वर्ष पहले एक अनोखी मुहिम चलाई के प्रयासों और सोशल मीडिया की मदद से पुरानी कड़ियों को जोड़ा गया और दोनों परिवारों की पहचान सुनिश्चित की गई। 9 अगस्त 2025 को यह मामला खबरों में आया। **सैनिकों के लिए लाखों राखियां:** देश की सहरदों पर चौबीसों घंटे तैनात रहने वाले भारतीय सेना के जवानों को घर की कमी महसूस न हो, इसके लिए दिल्ली के कई स्कूलों के छात्रों ने मिलकर कुछ वर्ष पहले एक अनोखी मुहिम चलाई

विशेष : रक्षाबंधन
28 अगस्त

थी। बच्चों ने अपने हाथों से तरह-तरह की सुंदर राखियां और उनके साथ सैनिकों के नाम शुभकामना संदेश लिखे। देखते ही देखते यह संख्या 72000 तक पहुंच गई। इसके अलावा तमिलनाडु का करूर जिला इस अभियान का मुख्य केंद्र बना। तमिलनाडु के करूर स्थित भरनी पार्क शिक्षण संस्थान के करीब 3000 छात्र-छात्राओं ने मिलकर 75000 से अधिक हस्तनिर्मित राखियां तैयार की थीं। इन राखियों की विशेषता यह थी कि इनमें से कई पर प्राचीन तमिल ग्रंथ 'तिरुक्कुरल' के श्लोक छपे थे। इस तरह जब करीब 1.5 लाख राखियां एकत्रित हो गईं तो इसकी जानकारी तत्कालीन रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह को दी गई। उन्होंने 6 अगस्त 2022 को एक विशेष चार्टर्ड विमान की व्यवस्था करवाई। रक्षा मंत्रालय ने इन राखियों को तीनों सेना प्रमुखों (थलसेना, नौसेना, वायुसेना) के जरिए सियाचिन ग्लेशियर,

थी। बच्चों ने अपने हाथों से तरह-तरह की सुंदर राखियां और उनके साथ सैनिकों के नाम शुभकामना संदेश लिखे। देखते ही देखते यह संख्या 72000 तक पहुंच गई। इसके अलावा तमिलनाडु का करूर जिला इस अभियान का मुख्य केंद्र बना। तमिलनाडु के करूर स्थित भरनी पार्क शिक्षण संस्थान के करीब 3000 छात्र-छात्राओं ने मिलकर 75000 से अधिक हस्तनिर्मित राखियां तैयार की थीं। इन राखियों की विशेषता यह थी कि इनमें से कई पर प्राचीन तमिल ग्रंथ 'तिरुक्कुरल' के श्लोक छपे थे। इस तरह जब करीब 1.5 लाख राखियां एकत्रित हो गईं तो इसकी जानकारी तत्कालीन रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह को दी गई। उन्होंने 6 अगस्त 2022 को एक विशेष चार्टर्ड विमान की व्यवस्था करवाई। रक्षा मंत्रालय ने इन राखियों को तीनों सेना प्रमुखों (थलसेना, नौसेना, वायुसेना) के जरिए सियाचिन ग्लेशियर,



वृक्ष रक्षाबंधन मनाती महिलाएं

लद्दाख, जैसलमेर और सिक्किम जैसे अत्यंत दुर्गम सीमावर्ती इलाकों में तैनात जवानों तक एयरलिफ्ट के माध्यम से पहुंचाने की जिम्मेवारी ली और उसे वहां तक पहुंचाया भी गया। **पर्यावरण संरक्षण के लिए वृक्ष-रक्षाबंधन:** ग्लोबल वार्मिंग के गंभीर संकट और तेजी से कटते जंगलों के बीच पर्यावरण के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए देश के कई राज्यों (विशेषकर बिहार, झारखंड और उत्तराखंड के पहाड़ी क्षेत्रों) में 'वृक्ष रक्षाबंधन' की शुरुआत हुई। बिहार में 13 अगस्त 2012 से तत्कालीन मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने इसकी शुरुआत की थी। तब से यहां रक्षाबंधन के दिन लोग जंगलों और अपने आस-पास के पार्कों में जाते हैं और पेड़ों को बड़े-बड़े रक्षासूत्र (राखियां) बांधते हैं। लोग इन पेड़ों को अपना भाई मानकर इनकी रक्षा करने और इन्हें कभी न काटने का संकल्प लेते हैं। ग्रामीण महिलाएं, बच्चे और बुजुर्ग जंगलों में जाकर देवदार, पीपल, बरगद जैसे बड़े पेड़ों पर हल्दी-मौली और सूती धागों से बनी विशाल राखियां बांधते हैं। उन्हें अपना 'वन-भाई' मानकर उनके संरक्षण की शपथ ली जाती है। पेड़ों की अंशायुध कटाई को रोकने के लिए पर्यावरणविदों और वन विभाग के सहयोग से यह मुहिम अब एक बड़े जन-आंदोलन का रूप ले चुकी है। *

सिने डेंड
अशोक जोशी

भा रतीय परिवार व्यवस्था में भाई-बहन का रिश्ता अनोखा और प्यारा होता है। बचपन में जहां इसमें नोक-झोंक होती है, वहीं उम्र बढ़ने के साथ यह रिश्ता भावनात्मक सहारे में बदल जाता है। हिंदी फिल्मों ने इस रिश्ते के अलग-अलग रंगों को पर्दे पर प्रस्तुत किया है। कहीं भाई, बहन की रक्षा के लिए सब कुछ छोड़ देता है, कहीं बहन-भाई के लिए वर्षों तक संघर्ष करती है और कहीं दोनों एक-दूसरे के सबसे अच्छे दोस्त बनकर सामने आते हैं।

बीते दौर की फिल्मों में भाई-बहन का रिश्ता: पुरानी हिंदी फिल्मों में भाई-बहन का रिश्ता प्रायः परिवार की भावनात्मक धुरी के रूप में दिखाई देता था। 'छोटी बहन' (1959) और 'राखी' (1962) जैसी फिल्मों ने भाई-बहन के स्नेह, जिम्मेदारी और त्याग को प्रमुखता दी। इन फिल्मों में परिवार केवल कहानी की पृष्ठभूमि नहीं था, परिवार ही कहानी का मूल भाग था। 'बड़ी बहन' (1949), 'मंझली दीदी' (1967) जैसी फिल्मों में भी यह भाव देखने को मिलता है।

सतर और अस्सी के दशक में सामाजिक संघर्ष तथा व्यावसायिक सिनेमा के प्रभाव के साथ भाई की भूमिका अकसर 'रक्षक' के रूप में उभरकर सामने आई। बहन की सुरक्षा और सम्मान के लिए संघर्ष करना भाई के चरित्र की पहचान बन गया। लेकिन इसी दौर में और बाद के दशकों में आई कुछ फिल्मों ने भाई-बहन के रिश्ते के दूसरे पक्षों को भी सामने रखा।

भाई-बहन की कुछ अलग कहानी 'हरे रामा हरे कृष्णा': साल 1971 में देव आनंद और जीतन अमान अभिनीत फिल्म 'हरे रामा हरे कृष्णा' बदलते सामाजिक वातावरण, पश्चिमी प्रभाव, नशे और हिंसा संस्कृति के बीच एक भाई द्वारा अपनी बहन को वापस पाने के प्रयास की मार्मिक कहानी थी। भाई-बहन के बीच बचपन का स्नेह, परिस्थितियों के कारण बिछोह में बदल जाता है और फिर भाई अपनी बहन को उस दुनिया से निकालने के लिए संघर्ष करता है, जिसमें वह फंस चुकी है।

इस फिल्म की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें भाई अपनी बहन का केवल 'रक्षक' नहीं है, वह उसके अतीत, उसकी पीड़ा और उसकी पहचान को समझने की कोशिश करता है। फिल्म का लोकप्रिय गीत 'फूलों का तारों का, सबका कहना है, एक हजारों में मेरी बहना है' तो हिंदी सिनेमा में भाई-बहन के प्रेम का प्रतीक बन चुका है। आज भी यह गीत राखी के अवसर पर उसी आत्मीयता से सुना जाता है। **संयुक्त परिवार में भाई-बहन का प्यार 'हम**

भाई-बहन के शाश्वत रिश्ते को केन्द्र में रखकर या इसके इर्द-गिर्द बुनी गई कहानियों और वास्तविकताओं पर हर दौर में हिंदी फिल्में बनती रही हैं। भाई-बहन के स्नेह भरे रिश्ते के विविध आयामों को दर्शाती कुछ फिल्मों पर एक नजर।

हर दौर की फिल्मों में रची गई भाई-बहन के रिश्ते की दास्तान



साथ-साथ हैं': नब्बे के दशक में सिनेमा ने संयुक्त परिवार और भाई-बहन के रिश्ते को अधिक घरेलू और सहज रूप में प्रस्तुत किया। 'हम साथ-साथ हैं' (1999) में भाई-बहनों के बीच प्रेम, विश्वास और त्याग कहानी का महत्वपूर्ण भाग है। यहां भाई-बहन केवल परिवार के सदस्य नहीं, बल्कि एक-दूसरे के भावनात्मक ताकत के रूप में दिखाए गए हैं। फिल्म में सभी भाई अपनी बहन का पूरा खयाल रखते हैं, उसे अपेक्षित मान और

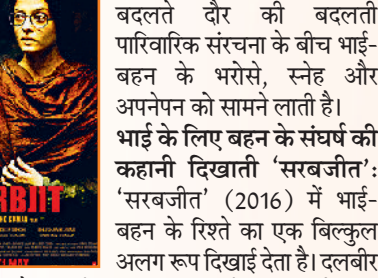


को बहुत प्रभावी तरीके से सामने लाता है। आधुनिक शहरी संदर्भ में भाई-बहन का रिश्ता 'दिल धड़कने दो': साल 2015 में रिलीज फिल्म 'दिल धड़कने दो' में भी भाई-बहन का रिश्ता आधुनिक उच्चवर्गीय शहरी परिवार के संदर्भ में दिखाई देता है। दोनों अपने परिवार की अपेक्षाओं और व्यक्तिगत इच्छाओं के बीच संघर्ष करते हुए एक-दूसरे के भरोसेमंद भावनात्मक ताकत के रूप में दिखाए गए हैं। फिल्म में सभी भाई अपनी बहन का पूरा खयाल रखते हैं, उसे अपेक्षित मान और



आदर देते हैं। **सुरिखल वक्त में भाई के साथ खड़ी उनकी कहानी 'माय ब्रदर... निरिखल':** नई सदी में भाई-बहन के रिश्ते की परिभाषा और विस्तृत हुई। अब बहन केवल भाई की सुरक्षा की जिम्मेदारी वाला पात्र नहीं रही। वह उसकी मित्र, विश्वासपात्र और संचर्ष की साथी भी बनी। 'माय ब्रदर... निरिखल' (2005) इसका महत्वपूर्ण उदाहरण है। फिल्म में बहन अपने भाई के कठिन दौर में उसके साथ जिस मजबूती से खड़ी रहती है, वह भाई-बहन के रिश्ते में समानता और भावनात्मक साझेदारी

को बहुत प्रभावी तरीके से सामने लाता है। **आधुनिक शहरी संदर्भ में भाई-बहन का रिश्ता 'दिल धड़कने दो':** साल 2015 में रिलीज फिल्म 'दिल धड़कने दो' में भी भाई-बहन का रिश्ता आधुनिक उच्चवर्गीय शहरी परिवार के संदर्भ में दिखाई देता है। दोनों अपने परिवार की अपेक्षाओं और व्यक्तिगत इच्छाओं के बीच संघर्ष करते हुए एक-दूसरे के भरोसेमंद भावनात्मक ताकत के रूप में दिखाए गए हैं। फिल्म में सभी भाई अपनी बहन का पूरा खयाल रखते हैं, उसे अपेक्षित मान और



बदलते दौर की बदलती पारिवारिक संरचना के बीच भाई-बहन के भरोसे, स्नेह और आपनेपन को सामने लाती है। भाई के लिए बहन के संघर्ष की कहानी दिखाती 'सरबजीत': 'सरबजीत' (2016) में भाई-बहन के रिश्ते का एक बिल्कुल अलग रूप दिखाई देता है। दलवीर कौर अपने भाई सरबजीत के लिए वर्षों तक संघर्ष करती है। यहां बहन किसी कमजोर या आश्रित पात्र के रूप में नहीं, बल्कि संघर्ष की अगली पंक्ति में खड़ी एक दृढ़ महिला के रूप में सामने आती है। यह फिल्म इस बात को रेखांकित करती है कि भाई-बहन का रिश्ता आवश्यकता पड़ने पर जीवन भर के संघर्ष का संबल बन सकता है। *

पर्दे से बाहर भी बने भाई-बहन के रिश्ते

फिल्मी पर्दे पर कलाकर एक-दूसरे के भाई-बहन बने नजर आते हैं, जबकि अकसर वास्तविक जीवन में उनके बीच ऐसा कोई रिश्ता नहीं होता। इसके उलट फिल्मी दुनिया से जुड़ी कुछ हस्तियों ने पर्दे के बाहर भाई-बहन का रिश्ता कायम किया और इस आत्मीय रिश्ते को ताऊ निमाया भी। महान गायिका लता मंगेशकर के जीवन में ऐसे आत्मीय रिश्तों की विशेष जगह थी। उन्होंने कई कलाकारों के साथ उनकी पारिवारिक आत्मीयता थी। दिलीप कुमार के साथ उनका संबंध विशेष रूप से भावपूर्ण था। दिलीप कुमार उन्हें बहन मानते थे और लता जी भी उन्हें अपने भाई का स्थान देती थीं। राखी के अवसर पर दोनों का यह संबंध सार्वजनिक रूप से भी चर्चित रहा। ऐसे ही संगीतकार मदन मोहन और गायक मुकेश को भी लता जी अपना भाई मानती थीं। इन दोनों को लता जी 'भैया कडकर बुलारी' थीं और उन्हें राखी बांधती थीं।



हरी को लता जी 'भैया कडकर बुलारी' थीं और उन्हें राखी बांधती थीं।